मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
सर्व मंगल मांगल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते ।।
सितम्बर–९१

नीली पुस्तक से

इस बार इस पुस्तक में से उन प्रयोगों को छांट कर दिया जा रहा है, जो इस महीने कामयाबी दिलाने में ज्यादा सहायक हैं, जो अचूक हैं, जिनका प्रभाव तुरन्त देखने को मिलता है।

● **छोटे दानों की असली रुद्राक्ष माला-गले में पहिनने योग्य**	– किसी भी प्रकार के ब्लड प्रेसर को नियंत्रित करने में जादू की तरह सहायक—	३००)रु०
● **दुर्लभ कमल के बीजों की असली माला**	– इन बीजों को घी में मिला कर अग्नि में आहुतियां देने से आकस्मिक लक्ष्मी प्राप्ति—	६०)रु०
● **चक्री शंख**	– रविवार की रात को इस शंख में घी का दिया जलाकर चौराहे पर रखने से किसी का भी पूर्ण वशीकरण—	६०)रु०
● **हत्था जोड़ी**	– किसी की भी बीमारी को जड़मूल से नष्ट करने के लिये रोगी पर घुमाकर आग में डालने से—	८०)रु०
● **शूकर दन्त**	– बालकों को नजर से बचाने के लिये काले धागे में पिरो कर गले में बांधने से—	६०)रु०
● **वजर बट्टू**	– किसी भी प्रकार की राजकीय बाधा या मुकदमे बाजी से निजात पाने के लिए मुखिया के सिर पर घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंकने से—	३०)रु०
● **पंच कौड़ी**	– खोये हुए बालक या व्यक्ति का स्वप्न में पता लगाने के लिए रविवार की रात सिरहाने रखने पर—	३०)रु०
● **चक्री सालिग्राम**	– कर्जा उतारने के लिए शरद पूर्णिमा के दिन घर के पूजा स्थान में स्थापित करने के लिये—	६०)रु०
● **सम्मोहन मुद्रिका**	– किसी को भी सम्मोहित करने के लिए निरन्तर उंगली में धारण करने योग्य—	६०)रु०

नोट :- **हमें आप पर भरोसा है, अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है केवल सम्बन्धित सामग्री का आदेश दे दें, बाकी हम सब कुछ संभाल लेंगे।**

सम्पर्क :- **मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान**, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

वर्ष–११

अंक–९

सितम्बर-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ ह्रिह्य विदे वदत्वं श्रियै नः करै लमित्वे न क्रिये परे चः ॥

हे गुरुदेव ! मैं अज्ञानी हूं, अबोध हूं, आपकी शरणागत हूं, आप मुझे विभिन्न दीक्षाएं देकर मेरा शरीर स्वर्ण की तरह दैदीप्यमान एवं मन साधना तत्व से अनुप्राणित कर दें।

साधना के घुंघरू

खनक उठे

गुरु धाम

कई दिनों से पत्रिका पाठकों और साधकों की यह इच्छा थी कि भारत की राजधानी दिल्ली में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** का कोई स्थान होना चाहिए जहां से साधकों को मार्गदर्शन प्राप्त करने में सुविधा रहे, और वे वहां पहुंच कर साधना से सम्बन्धित सामग्री या साहित्य प्राप्त कर सकें।

पूरे सिद्धाश्रम साधक परिवार का मन उल्लसित और हर्षित है, क्योंकि दिल्ली में भी एक भव्य, रमणीय, और अत्यन्त शान्त आध्यात्मिक वातावरण युक्त सिद्धाश्रम साधक परिवार का स्थान बन गया है, अब साधक सुविधानुसार दिल्ली से भी सम्पर्क स्थापित कर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

इस गुरु धाम और सिद्धाश्रम साधक परिवार की शाखा का पता है—

३०६, कोहाट इनक्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली, टेलीफोन नं०-७१८२२४८

पिछले एक महीने में यहां कई गतिविधियां प्रारम्भ हुई, प्रत्येक गुरुवार की शाम को दूर-दूर से साधक और शिष्य इस स्थान पर एकत्र होते हैं ध्यान आयोजन करते हैं तथा गुरु पूजन, गुरु आरती सम्पन्न करते हैं, इसी प्रकार प्रत्येक महीने की २१ तारीख को भी पूरे दिन समारोह जैसा वातावरण रहता है, पिछले दिनों रोहतक के **चन्दा सिंह पहल** के नेतृत्व में पूरी बस भर कर साधक वहां आ गये और गुरुदेव के सान्निध्य में बैठ कर साधना की बारीकियां सीखीं, गुरु आरती की, और आनन्दपूर्ण वातावरण से तरो-ताजा हो कर अपने-अपने स्थान को लौट गये।

इसी प्रकार अन्य स्थानों से भी साधकों का समूह वहां आने लगा है और चार-घण्टे वहां रह कर साधना की उर्जा से अनुप्राणित हो कर अपने कार्यों में लग जाते हैं।

अठारह सिद्धियां

अगस्त अंक में हमने अठारह अद्वितीय सिद्धियों के बारे में जानकारी दी थी, साधकों की ललक थी और इस सम्बन्ध में हजारों पत्र हमें प्राप्त हुए, जिसमें उन्होंने इन साधनाओं को सीखने, समझने एवं पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा प्रगट की है।

यह पत्रिका और संस्था आपकी धरोहर है, और इसे आपके त्याग से सींच कर पल्लवित, पुष्पित एवं सौरभ युक्त बनाना है, और इसके लिए कुछ त्याग तो जरूरी है जो ऐसी अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करना चाहता है, उनके त्याग की परीक्षा भी तो हो जानी चाहिए।

तभी तो इस कसौटी पर खरे उतरने वाले साधकों और शिष्यों के नाम, गुरुदेव की उंगलियों पर होंगे, इसी

अंक में इस सम्बन्ध में स्पष्ट किया जा चुका है, कि जो स्वयं आजीवन सदस्य बनें या जिनकी प्रेरणा से आजीवन सदस्य बनें, उन्हें इन अठारह सिद्धियों से सम्बन्धित अद्वितीय यंत्र और सामग्री निःशुल्क भेजते रहने की व्यवस्था होगी, और पूज्य गुरुदेव का व्यक्तिगत मार्गदर्शन इस सम्बन्ध में उन्हें प्राप्त हो सकेगा जिससे कि वे इनमें प्रत्येक साधना या एक से अधिक साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

मंहगाई और कागज के आसमान छूते हुए भाव इस बात के लिए हमें बाध्य कर रहे हैं, कि जनवरी ९२ से हम आजीवन सदस्यता शुल्क २४००) रु० कर दें, पर फिलहाल जो ३१-१०-९१ तक आजीवन सदस्य बनेंगे उनसे मात्र १५००) रु० ही लिये जाएंगे और यह भी उनकी धरोहर धनराशि है, वे रजिस्टर्ड सूचना दे कर दस साल बाद यह धरोहर धनराशि पुनः प्राप्त कर सकते हैं और जब तक यह धनराशि पत्रिका कार्यालय में जमा होगी तब तक उन्हें पत्रिका निःशुल्क दी जाती रहेगी, इससे वे प्रत्येक वर्ष पत्रिका शुल्क भेजने के झंझट से मुक्त हो सकेंगे और साथ ही साथ उन विशेष साधकों की सूची में भी नाम अंकित कर सकेंगे जो अठारह सिद्धियों को सीखने के लिए अग्रसर हैं।

नवरात्रि पर्व

इस वर्ष का नवरात्रि पर्व अपने आप में ही अद्वितीय और भव्य होगा, साथ ही साथ इसमें भगवती दुर्गा से सम्बन्धित उन सिद्धियों को सिखाया जायेगा, प्रयोग कराया जायेगा जो कि गोपनीय रही हैं।

८ अक्टूबर से १६ अक्टूबर तक चलने वाला दीवाने साधकों का यह जमघट गुरु भाई-बहिनों का सम्मेलन और साधना के आनन्दपूर्ण वातावरण से युक्त यह नवरात्रि शिविर जोधपुर में सम्पन्न होने जा रहा है, इसमें प्रत्येक साधक और शिष्यों को भाग लेना ही है, क्योंकि इनमें से ही उन हंसों को चुना जा सकता है, जो सात समुद्र पार कर अपनी उड़ान भर सकें।

साधकों को चाहिए कि वे यह पत्रिका प्राप्त होते ही अपने आने की सूचना दे दें और हर हालत में ७ अक्टूबर तक जोधपुर पहुंच जांय, यह नवरात्रि शिविर उनके जीवन का एक आश्चर्यजनक मोड़ और पाथेय होगा।

दीपावली पर्व

५ नवम्बर को दीपावली पर्व है, और साधकों को इस सम्बन्ध में अभी से अपनी तैयारियां कर लेनी चाहिए, क्योंकि इस बार का दीपावली पर्व विशेष संयोगों और योगों से सम्पन्न है।

इस बार दीपावली पर्व पर **इन्द्राक्षी लक्ष्मी प्रयोग** सम्पन्न करना है, जिससे कि कोई साधक निर्धन न रहे, किसी साधक पर कर्जा न रहे, और कोई साधक दीन-हीन या परेशान न रहे, इसीलिए इस साधना का विशेष महत्व है।

जो साधक इस प्रकार की अद्वितीय साधना में भाग लेना चाहते हैं, वे पत्र द्वारा सूचित कर दें, जिससे कि उन्हें इस प्रकार की साधना व्यक्तिगत रूप से दी जा सके, इसके लिए किसी प्रकार की धनराशि भेजने की आवश्यकता नहीं है, केवल आप पत्र द्वारा सूचित कर दें हम आपको इस सम्बन्ध में मार्गदर्शन दे कर उस श्रेष्ठ साधना से सम्बद्ध करने का प्रयास करेंगे जो अपने आपमें भव्य और अद्वितीय है।

विशिष्ट दीक्षाएं (डाक द्वारा दीक्षा प्राप्त कीजिये)

साधना ग्रन्थों के अनुसार कुल १०८ दीक्षाएं होती हैं, जो कि अपने आपमें भव्य और महत्वपूर्ण होती हैं, किसी भी साधक की ऊंचाई इस बात से आंकी जाती है, कि वह अब तक इनमें से कितनी दीक्षाएं गुरु के द्वारा प्राप्त कर चुका है।

अगले किसी अंक में इन दीक्षाओं के बारे में विस्तार से देने की व्यवस्था की जा सकेगी पर इनमें से निम्न ग्यारह दीक्षाएं तो अपने आप में अद्वितीय हैं, जो कि आप में से अधिकांश साधकों को लेनी चाहिए, इन दीक्षाओं के लिए कोई आपको कहेगा नहीं, अपितु आपको स्वयं को हठपूर्वक गुरुदेव से इन दीक्षाओं को प्राप्त कर जीवन को पूर्णता देने का प्रयास करना चाहिए।

ये दीक्षाएं हैं—

१-गुरु दीक्षा, २-ब्रह्मवर्चस्व दीक्षा, ३-रसेश्वरी दीक्षा, ४- पूर्णत्व दीक्षा, ५- सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा, ६- कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, ७-क्रियमाण दीक्षा, ८- देवदुर्लभ दीक्षा, ९- साधना सिद्धि दीक्षा, १०- इष्ट प्राकाम्य दीक्षा, ११- गुरु पूर्णत्व दीक्षा।

इन दीक्षाओं को मिल कर अथवा फोटो भेज कर उसके माध्यम से भी इस प्रकार की दीक्षा को प्राप्त किया जा सकता है, आप पत्र लिख कर इस सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इन्द्रधनुष वीडियो मैगजीन में

जिस प्रकार से कई प्रकार की पत्रिकाएं निकलती हैं, उसी प्रकार से वीडियो कैसेट के रूप में भी प्रतिमाह पूरी की पूरी मैगजीन निकलती है, जिसे टेलीवीजन के माध्यम से देखा जा सकता है।

इन्द्रधनुष इस प्रकार की एक अद्वितीय मैगजीन है, जो दिल्ली से प्रकाशित होती है, इसके अगस्त अंक में पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित एक विस्तार से वार्ता प्रकाशित हुई है जो कि सम्मोहन विज्ञान से सम्बन्धित है।

शरद पूर्णिमा

२३-१०-९१ को शरद पूर्णिमा है, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण पर्व है, प्रत्येक साधक को चाहिए कि इस अवसर पर वह कुछ गुरु भाइयों के साथ किसी एक साधक के घर में पूज्य गुरुदेव का पूजन कर, आधे घण्टे का ध्यान समारोह करें, और छोटा सा यज्ञकुण्ड बना कर मात्र घृत की १०८ आहुतियां विश्व कल्याण हेतु दें, जिससे कि संसार में पवित्र और उदात्त वातावरण की स्थापना हो सके और मानव जाति में साधना के प्रति अभिरुचि जागृत हो सके।

पूरे भारतवर्ष में साधना शिविर

मानव जाति को युद्ध की विभीषिका से बचाने का एक मात्र साधन साधना प्रयोग ही है, और पूरे भारतवर्ष में इस प्रकार के साधना प्रयोग सम्पन्न हो रहे हैं, **काठमाण्डू** में **सनद कुमार अधिकारी** के नेतृत्व में अत्यधिक गति के साथ कार्य सम्पन्न हो रहा है, इसी प्रकार **एम० आर० वशिष्ठ** ने पूरा **हिमाचल प्रदेश** संभाला हुआ है, **बम्बई** में भी कुछ साधकों ने इस क्षेत्र में काफी कार्य किया है, और वे भव्यता के साथ इन साधना शिविरों को ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं, इसी प्रकार **अमेरिका** में **वीरेन्द्र श्रीवास्तव** भव्य और व्यापक तैयारियां कर रहा है, **कनाडा** में **नीलम गुप्ता** के निर्देशन में आने वाले समय में यज्ञ का कार्यक्रम संपन्न होने जा रहा है, **मारीसस** में जो कुछ होने जा रहा है, वह तो सिद्धाश्रम साधक परिवार के इतिहास में भव्यता के साथ अंकित होगा, इसी प्रकार **मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश** और सुदूर दक्षिण से भी साधना शिविरों और साधना प्रयोगों के जो समाचार प्राप्त हो रहे हैं, वे अपने आपमें इतिहास में अंकित होने योग्य हैं। ★

८-१०-९१ से १६-१०-९१

आओ जीवन का नव निर्माण करें

नींव रखें श्रेष्ठता की

भगवती जगदम्बा का

आह्वान कर

इस शारदीय नवरात्रि से

शारदीय नवरात्रि मां भगवती दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना का सिद्ध पर्व है, अपने प्रत्येक अणु को चैतन्य करने का पर्व है, देवी की महिमा अनन्त है, देवी के स्वरूप का विवेचन -

प्रत्येक साधक की यही इच्छा रहती है, कि वह नवरात्रि के शक्ति पर्व का सम्पूर्ण रूप से उपयोग करे, उसके प्रत्येक दिन को एक विशेष ध्यान में, प्रयोग में लाये, क्योंकि नवरात्रि का प्रत्येक दिन सामान्य दिनों से बहुत अलग है, एक शक्ति चक्र जो इन दिनों जागृत रहता है, उसकी तो तुलना ही नहीं की जा सकती ।

अन्य दिनों में साधक, साधना करने में जितना प्रयास, जितना तपोबल, जितना मन्त्र जप करता है, उसका शतांश भी इन दिनों में उपयोग करता है, तो भी उसे सिद्धि प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता, भगवती दुर्गा की साधना का स्वरूप ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक श्रेष्ठ भवन की मजबूत नींव स्थापित करना, यह साधना, नींव की साधना है, जो यदि पूर्ण रूप से मजबूत है तो चाहे कितने भी तूफान क्यों न आयें, झटके लगें, विपरीत स्थितियां आयें, जीवन रूपी भवन को कोई क्षति नहीं पहुंच सकती, क्योंकि इसका आधार साधक ने भगवती दुर्गा की साधना से स्थापित किया है ।

एक साधना प्रारम्भ की और सफलता भी मिल गई, तो वह सफलता स्थायी नहीं रह सकती, कुछ तात्कालिक प्रभाव तो मिल सकता है, लेकिन स्थायित्व प्राप्त नहीं हो सकता, लेकिन यदि आपने भगवती दुर्गा की साधना पूर्ण रूप से सम्पन्न की है, और मां दुर्गा का आशीर्वाद वरदहस्त आपको प्राप्त है, तो प्रत्येक साधना अपने आप सिद्ध होती चली जायेगी, क्योंकि प्रत्येक साधना के लिए भीतर से शक्ति प्राप्त होना आवश्यक है, और शक्ति केवल मां जगदम्बा की साधना से ही प्राप्त हो सकती है, चाहे शिव की साधना करें अथवा विष्णु की साधना करें,

अथवा लक्ष्मी उपासना करें सबसे पहले तो देवी मां का आह्वान करना ही पड़ेगा—

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वैच्छया त्रिगुणात्मिका ॥
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी ॥
तेजः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा ॥
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला ॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड २।६६)

आदि शक्ति भगवती की आराधना करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं, "तुम्हीं विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, जो सृष्टि के प्रारम्भ से आद्या शक्ति के रूप में विराजमान हो, देवी तुम त्रिगुणात्मक स्वरूपा हो, सगुण-निर्गुण दोनों तत्व तुम में समाहित हैं, तुम्हीं परब्रह्म स्वरूप सत्य, नित्य एवं सनातनी परम तेज स्वरूपा तथा अपने भक्तों पर कृपा हेतु शरीर धारण करती हो, तुम सर्व स्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार, परात्पर, सर्व बीज स्वरूपा, सर्व पूज्या हो, तुम सर्वज्ञ, सब प्रकार से मंगल करने वाली तथा सर्व मंगलों की मंगल हो।"

आगे लिखा है, कि आदि शक्ति से ही ब्रह्मा विष्णु और रुद्र की उत्पत्ति हुई और उसी से मरुद्गण, गन्धर्व, अप्सराएं, किन्नर, अश्विनीकुमार, मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि उत्पन्न हुए, जो भोग्य और अभोग्य, दृश्य और अदृश्य है, सभी की उत्पत्ति इसी आद्या शक्ति से हुई है।

किंतत्कार्यं जगत्यस्मिन् युत शक्तया न सिद्धयति ।।

ऐसा कौन सा कार्य है, जो शक्ति से सिद्ध नहीं हो सकता, शक्ति से सुख है और उसी में सब कुछ है ।

शक्ति को उपन्न करने के लिए एक विस्फोट करना पड़ता है, और वह पूर्ण रूप से सम्भव है, नवरात्रि का यह शक्ति-महोत्सव उसी शक्ति का जागरण उत्सव है, इसे याद रखना तभी सब कुछ सम्भव होगा ।

शक्ति और शक्तिमान में भेद नहीं है

जगदम्बा-आराधना, शक्ति की आराधना है, और शक्ति का तात्पर्य केवल बल ही नहीं है, और न ही शक्ति प्राप्त कर दूसरों के ऊपर दमन करना है, शक्ति तो एक भाव है, जो आपके सामर्थ्य को प्रगट करता है, शक्ति और शक्तिमान अलग-अलग नहीं किये जा सकते, जिस प्रकार चन्द्रमा का सम्बन्ध चांदनी से है, दीपक का सम्बन्ध प्रकाश से है, यदि दीपक नहीं, तो प्रकाश ही नहीं, इसी प्रकार शक्ति नहीं तो शक्तिमान भी नहीं, अतः यदि शक्तिमान होना है तो शक्ति की आराधना तो करनी ही पड़ेगी, और इसे सिद्ध करने के लिए विशेष प्रयास, साधना आवश्यक ही है ।

जो दुर्बल है उसका जीवन तो व्यर्थ है, जो अपने सामर्थ्य से शक्ति-आराधना करता है, उसका घर, धन-धान्य, पुत्र, स्त्री, लक्ष्मी से कभी रिक्त नहीं हो सकता, इसी प्रकार शक्ति तो दुर्बल के घर दरिद्रता के रूप में, विद्वानों के हृदय में बुद्धि रूप से सज्जन लोगों में श्रद्धा रूप में, कुलीनों में यश रूप में निवास करती है, शक्ति का साकार रूप सब जगह सब में है, इसकी साधना-आराधना ही आपके भीतर, आपके घर में, इसकी स्थिति को, इसके स्वरूप को प्रबल अथवा निर्बल करती है ।

आद्या शक्ति महोत्सव–शारदीय नवरात्रि

नवरात्रि का यह विशेष पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियां, निकाल बाहर कर अपने भीतर शक्ति भरने का पर्व है, यदि संसार विपत्ति सागर है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिए शक्तिमान होना ही पड़ेगा, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरनी पड़ेगी, यह शक्ति ही अपने अलग-अलग रूपों में विद्यमान हो कर साधक के कार्य सम्पन्न करती है ।

इसी शक्ति का सबसे श्रेष्ठ स्वरूप महालक्ष्मी है, जो सीमा-रहित, नित्य निवासिनी विष्णु की नारायणी शक्ति है, और इसी शक्ति के विभिन्न स्वरूप—लक्ष्मी, श्री, पद्मा, पद्मालिनी, कमला, इत्यादि हैं, इस **"अहन्ता"** शक्ति की सिद्धि ही इस शारदीय नवरात्रि में सम्पन्न करना है ।

मां दुर्गा के तीनों महान् स्वरूपों के बारे में **"श्रीदेव्यथर्वशीर्ष"** में लिखा है कि, "हे देवी ! आप चित्त स्वरूपिणी महासरस्वती हैं, सम्पूर्ण द्रव्य, धन-धान्य रूपिणी महालक्ष्मी हैं तथा आनन्दरूपिणी महाकाली हैं, पूर्णत्व पाने के लिए हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी स्वरूपिणी चण्डीके, आपको बारम्बार नमस्कार है, मेरे अविद्या, अज्ञान, अवगुण रूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थी काट कर मुझे शक्ति प्रदान करें ।"

ऐसी महाशक्ति प्राप्ति के लिए साधना तत्व प्रबल बना कर इस शारदीय नवरात्रि में कुछ विशेष करना ही है, इसलिए यह महोत्सव, **"शक्ति महोत्सव"** के रूप में आयोजित किया जायेगा, और यही अवसर है प्रत्येक साधक के लिए अपने बन्धनों को काटने का, अपने जीवन की गलतियों के जो घाव बन गये हैं, उन घावों को मिटाने का, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की कृपा बिना जीवन में जो घुन लगा हुआ है और जिससे जीवन का जो आनन्द जर्जर हो गया है, जीवन की जो निश्चिन्तता समाप्त हो गई है, उस घुन को पूर्ण रूप से नष्ट कर पुनः
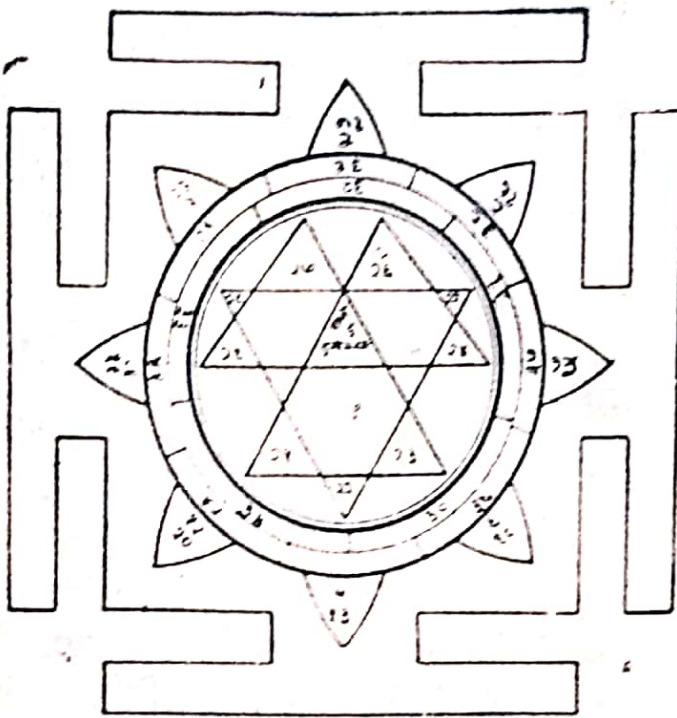
दुर्गा यन्त्र

मन, प्राण को शक्तिवान, सामर्थ्यवान बना देता है, और केवल इच्छा रख कर ही नहीं, अपितु शुद्ध रूप से साधना कर यह सब प्राप्त किया जा सकता है, जिससे जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हो सके।

शक्ति महोत्सव—क्या क्या सम्पन्न होगा !

इस बार शारदीय नवरात्रि एक विशेष विधि-विधान सहित सम्पन्न की जायेगी, कुछ ऐसे प्रचण्ड अनुष्ठान और दुर्लभ साधनाएं सम्पन्न होंगी, जिससे साधक एक नयी दुनियां में अपने-आपको अनुभव करेगा, इन साधनाओं के सम्बन्ध में अभी बहुत कुछ लिखना संभवतया आत्म प्रशंसा जैसी होगी, परन्तु जैसा पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रिय शिष्यों को बताया है, उससे इस नवरात्रि की महानता और अनुष्ठानों के बारे में झलक अवश्य मिली है।

१– संकल्प सिद्धि–सिद्धेश्वरी साधना
२– त्रिविध गज लक्ष्मी साधना
३– क्रिया शक्ति जागरण-भक्ति साधना
४– श्री त्रिपुर सुन्दरी साधना
५- काल भैरव सिद्धि भैरवी साधना
६- कार्य कारण स्वरूपा दुर्गा साधना
७– योग तत्व जागरण साधना
८– मक्कर केतु सिद्धि वशीकरण साधना
९– कल्पद्रुम सिद्धि मनोकामना पूर्ति साधना
१०- सौन्दर्य सिद्धि अप्सरा साधना
११- नवदुर्गा— १-शैली पुत्री, २-ब्रह्मचारिणी, ३-चन्द्रघण्टा, ४-कूष्माण्डा, ५-स्कन्दमाता, ६-कात्यायनी, ७-कालरात्रि, ८-महागौरी, ९-सिद्धिदात्री साधना।

कहीं कोई न्यूनता न रह जाय हर साधक पूर्ण शान्त मन से कुछ कर सके, इसके लिए विशेष व्यवस्था की गई है, ऊपर लिखे अनुष्ठान के एक-एक पद के बारे में पूज्य गुरुदेव शिष्यों को विस्तार से समझायेंगे, कुछ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष क्रियाए सम्पन्न की जायेंगी।

पूर्णदं पूर्णं मादाय पूर्णमेवावशिष्यते

पूर्ण की उपासना से ही पूर्णत्व की प्राप्ति होती है, और अपूर्ण की उपासना से अपूर्णत्व की, इसीलिए इस शक्ति महोत्सव में तुम्हें पूर्णत्व की साधना करनी है।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

ऐश्वर्यवचनः शश्चक्तिः पराक्रम एव च।
तत्स्वरूपा तयोदात्री सा शक्तिः परिकीर्तिता॥

'श' नाम ऐश्वर्य अर्थात् सुख-सुविधा, सौभाग्य, आनन्द का है और 'क्ति' नाम पराक्रम, बुद्धि, बल, युक्ति का है, एवं ऐश्वर्य-पराक्रमस्वरूप और दोनों को प्रदान करने वाली को शक्ति कहते हैं, और इसे प्राप्त करना ही है।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

शक्ति यंत्र

	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
ॐ	१०	२००	वा	५००	ॐ
ॐ	१०	२००	वा	५००	ॐ
ॐ	१०	२००	वा	५००	ॐ
ॐ	१०	२००	वा	५००	ॐ
	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	

गुरु पूर्णिमा की सौगन्ध निभानी है

बेंगलोर में हमने पूज्य गुरुदेव के समक्ष सौगन्ध ली थी, कि नवरात्रि शिविर पूरे जोश-खरोश के साथ सम्पन्न करेंगे, और अपने साथ केवल श्रद्धा, विश्वास, समर्पण दृढ़ता, संकल्प का हृदय भर गुरुधाम जोधपुर पहुंचेंगे, और गुरु सान्निध्य में, गुरु चरणों में, गुरु कृपा से मां जगदम्बा का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त कर लेंगे, इन नौ दिनों में मां और भक्त के बीच कोई दूरी नहीं रह जायेगी।

एक बार शक्ति का वज्र पकड़ में आ गया, संकल्प की सिद्धि हो गई तो फिर छोटी-मोटी बाधाएं तो अपने आप दूर हो जायेंगी, समर्पित मन से आगे तो बढ़ना ही पड़ेगा।

यह नव-निर्माण शिविर है

दिनांक **८-अक्टूबर ९१ को** प्रारम्भ होने वाले इस नवरात्रि शिविर में कुछ विशेष बातें भी हैं, सर्वप्रथम तो एक नवरात्रि बढ़ गई है, इस हेतु साधना के कुछ विशेष विधान सम्पन्न हो सकेंगे, ग्रह स्थिति भी सिद्धिकारक बनी है, कन्या का सूर्य जो कि पूरी नवरात्रि रहेगा, और मंगल-बुध का एक स्थान में सयोग, गुरु-शुक्र का एक ही स्थान में संयोग, श्रेष्ठ फलकारक है।

यह शक्ति महोत्सव केवल मन बहलाने, घूमने-फिरने के लिए आयोजित नहीं किया जा रहा है, पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण नम्रता से मां कृपा से शक्ति बीज प्राप्त करने हेतु अनुष्ठान करने हैं, क्रियाएं सम्पन्न करनी हैं, केवल दर्शक की भांति इसे देखना नहीं है, इन नौ दिनों में तो अपने आपमें पूर्ण रूप से खो कर क्षण-क्षण जीना है, हर क्षण का आनन्द सर्वथा नवीन होगा, एक क्षण की व्यर्थता से बहुत कुछ खो सकते हो, जब अपने आपमें रहना सीख जाओगे, तो फिर मां-कृपा कैसे प्राप्त नहीं होगी, वह तो पूर्ण रूप से प्राप्त होनी ही है।

यह निमन्त्रण पूज्य गुरुदेव का संदेश है, कि बहुत सो लिये अब झकझोर कर खड़ा होना है, अपनी निद्रा-आलस्य का त्याग कर इस शक्ति महोत्सव में भाग लेना है, तभी तो जीवन की सार्थकता है।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण सस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

रुद्रहीन विष्णुहीनं न वदन्ति जनः किल।
शक्तिहीनं यथा सर्वे प्रवदन्ति नराधम॥

रुद्रहीन, विष्णुहीन कह कर किसी का तिरस्कार नहीं किया जाता, शक्तिहीन-अशक्त, नपुंसक, निकम्मा, किसी काम का नहीं, ऐसा कह कर अनादार-अपमान किया जाता है, इसीलिए शक्तिमान होना आवश्यक है, शक्ति नहीं तो रुद्र और विष्णु की साधना भी संभव नहीं।

गुरु-स्तवन

ॐ नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्यावतारसंसिद्धये स्वीकृतानेकविग्रह ।।१।।

नारायणस्वरूपाय परमार्थैकरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभाविने चिद्घनाय ते ।।२।।

स्वतन्त्राय दयाक्लुप्तविग्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ।।३।।

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनां ।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनं ज्ञानदायिने ।।४।।

पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यादुपर्यधः ।
सदा सच्चितस्वरूपेण विधेहि भवदासनम् ।।५।।

हे परम पूज्य नाथ ! भगवन सद्गुरु रूप धारी शिव !! आपको नमस्कार !!! इस चराचर जगत में विविध ज्ञान-विद्या के उद्भव हेतु, सिद्धि हेतु आपने यह स्वरूप ग्रहण किया है, आप साक्षात् नारायण स्वरूप हैं, परमार्थ, सेवा, परमार्थ ध्यान ही आपका शुद्धतम श्री विग्रह रूप है, सम्पूर्ण अज्ञान रूपी अन्धकार दोष का भेदन करने वाले, चिद्घन स्वरूप आपको नमो नमः ! आप परम स्वतन्त्र हैं, केवल शिष्यों, साधकों, जीवों पर कृपा, करुणा करने हेतु ही शरीर धारण किये हैं, स्वतन्त्र होते हुए भी प्रेमवश अपने भक्तों, शिष्यों के आधीन हैं, कल्याणों के भी कल्याण, मंगलों के भी मंगल, भव्यों के भी भव्य, आपके रूप को नमस्कार, आप ही विवेकियों के विवेक, विचारकों के विचार, प्रकाशकों के प्रकाश हैं, ज्ञानियों को ज्ञान देने वाले आप ही श्री स्वरूप हैं, बार-बार नमस्कार, आपको ! आपका यह शिष्य हर दिशा से आपको हर ओर से प्रणाम करता है, केवल इतना ही निवेदन है, कि सदा मेरे चित्त को आसन बनाएं, और मुझे कृतार्थ करें । ★

अपराजिता सिद्धि

तो केवल

विजयादशमी साधना

से ही सम्भव है

इस वर्ष विजयादशमी को अपराजिता सिद्धि प्रयोग सम्पन्न करना ही है, यह रात्रि साधना हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण है, सिद्ध मुहूर्त रात्रि १० बज कर ५१ मिनिट से प्रारम्भ होगा और २ बज कर ४९ मिनिट तक रहेगा, साधना प्रयोग इसी समय सम्पन्न करना है।

पराजय का तात्पर्य है, पीड़ा, हानि, नुकसान, बाधा, विरोध, कार्य में अपूर्णता, अपमान इत्यादि, यदि कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है, तो वह आपकी पराजय है, और बार-बार पराजय मिलती है, तो उत्साह भी समाप्त हो जाता है, पराजित होना अथवा न होना आप पर ही निर्भर करता है, क्योंकि आपमें स्वयं में ही कोई कमी रहती है, अथवा दोष होता है, चाहे वह दोष किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग से हो, अथवा ग्रह-दोष, पराजित होने का तात्पर्य है, आप पर कोई हावी हो रहा है, आप दब कर जी रहे हैं, और ऐसा जीवन में होता है, अपराजय होने का तात्पर्य है, कि आपके दोष दूर हो जांय, आप अपने-आपको पहिचान सकें, अपने संकल्प के अनुसार कार्य कर

सकें, दूसरे यदि आपको हानि भी पहुंचाने का प्रयास करें, तो आपको हानि न पहुंचे, जो भी शत्रु आप पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग करें वह उलटा पड़ जाय, आपको प्रभावित करने की बजाय उलटा उसे ही हानि दे दे, तभी तो विशेषता है, जीवन का आनन्द है।

विजयादशमी ही क्यों ?

विजयादशमी तो विजय पर्व है, इस दिन विजय प्राप्ति की ही साधना सम्पन्न की जानी चाहिए, इस दिन ऐसी साधना सम्पन्न करनी चाहिए, कि जो गलत है, दोष-युक्त है, उसे काट कर अलग कर दें, जीवन के कांटों को अपने मार्ग से दूर हटा दें, तभी विजयादशमी की सार्थकता है, केवल कथा-कहानियों की तरह इसे पूज्य गुरुदेव के शिष्यों के लिए मनाना तो इस विशेष सिद्धि मुहूर्त का दुरुपयोग करना है।

जो रावण आपके शरीर को खा रहा है, जो भय-रूपी कंस आपकी कार्य सिद्धि को रोकता है, उसका नाश करने हेतु इस शुभ मुहूर्त का उपयोग किया जाना चाहिए, हर दिन एक सा नहीं होता, विजयादशमी तो कई-कई अर्थों में एक विशेष दिवस है, अपने मन प्राण को चैतन्य करने का सिद्धि दिवस है और साधक को, जो क्रियाशील हो जाय उसे कौन रोक सकता है ? उसका तो तेज प्रगट हो कर ही रहेगा, और इसके लिए यदि कितना भी प्रबल अनुष्ठान करना पड़े तो वह कम ही है, प्रत्येक क्षण का उपयोग करना ही है, इस जीवन का हिसाब-किताब इस जीवन में ही निपटा दें, तो अच्छा है।

अपराजिता सिद्धि

जीवन में अपराजित रहने का तात्पर्य है, प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना, अपनी क्षमता सामर्थ्य के अनुसार जो काम हाथ में ले, उसमें लक्ष्य सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाय, शास्त्रों के अनुसार अपराजिता के छः अर्थ हैं—

१- किसी भी प्रकार के शत्रु को परास्त करना, और शत्रुओं पर हावी रहना।

२- जीवन में किसी भी प्रकार का भय, बाधा, रोग, कष्ट या परेशानी न होना, सर्वथा रोग मुक्त हो कर जीवन व्यतीत करना।

३- वाद-विवाद, मुकदमे इत्यादि में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करना।

४- जीवन में अपनी आजीविका के सम्बन्ध में आने वाली बाधाओं की शान्ति और कार्य सिद्धि।

५- किसी भी प्रकार की राज्य बाधा से पूर्णतः बचाव और कोई विपत्ति आये तो उसकी निवृत्ति।

६- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपराजित रहते हुए पूर्ण आनन्द के साथ जीवन की यात्रा।

साधना सामग्री

विजयादशमी की इस प्रथम महत्वपूर्ण रात्रि साधना में तीन वस्तुओं —**१- अपराजिता यन्त्र**, **२- शंख माला**, **३- सियार सिंगी** की आवश्यकता रहती है, इन तीनों का विशेष उपयोग है, पूर्ण मन्त्र चैतन्य सामग्री ही काम में लेनी चाहिए।

विधि-विधान

स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन कर साधक **रात्रि १० बज कर ५१ मिनट** से प्रयोग प्रारम्भ कर दे, साधना के अवसर पर पीली धोती धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय और तेल के तीन दीपक लगा लें, एक थाली में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उसके मध्य में **अपराजिता यन्त्र** रख दें, और उसके सामने ही **सियार सिंगी** को स्थापित कर दें।

इसके बाद इन दोनों वस्तुओं की संक्षिप्त पूजा करें अर्थात् इस पर कुंकुम अक्षत और पुष्प चढ़ावें बाद में अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि मैं अमुक कार्य के लिए साधना सिद्ध कर रहा हूं और मुझे इसका लाभ कल प्रातः सूर्योदय से ही प्राप्त हो जाना चाहिए।

इसके बाद साधक शंख माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

अपराजिता मन्त्र

ॐ ह्रीं मम शत्रुन् हन् हन् कालि शर शर, दम दम मर्दय मर्दय तापय तापय पताय पताय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय मम सिद्धि देहि देहि फट् ॥

यह मन्त्र जप **शंख माला** से होना चाहिए और उस रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद दूसरे दिन सूर्योदय से पहले-पहले यह पूरी सामग्री समुद्र में, नदी या तालाब में विसर्जित कर देनी चाहिए, अथवा यह संभव न हो तो प्रयोग करने के बाद रात्रि को अपराजिता यन्त्र, सियार सिंगी तथा शंख माला को जहां तीन रास्ते मिलते हों, उस रास्ते पर रख कर आ जाना चाहिए, और पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिए।

ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है, और जीवन भर उसे अनुकूलता बनी रहती है।

भय बाधा शान्ति का भैरव प्रयोग

विजयादशमी का शुभ मुहूर्त भैरव साधना के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ एवं शीघ्र सिद्धि दायक मुहूर्त है, इस रात्रि को प्रत्येक साधक को भैरव प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, भैरव तो किसी भी प्रकार की विपत्ति, बाधा दूर करने वाले, विजय प्रदान करने वाले, और शीघ्र प्रसन्न होने वाले, सरल देव हैं, जो कि साधक की जीवन भर रक्षा करते हैं।

यह साधना अत्यन्त सरल और सौम्य है, इस साधना का प्रयोग किसी गलत कार्य हेतु नहीं करना चाहिए, गायत्री, शिव, विष्णु, की साधना करने वाला कोई भी साधक स्त्री अथवा पुरुष यह विशेष भैरव साधना सम्पन्न कर सकते हैं, यदि स्त्रियां यह साधना सम्पन्न करती हैं तो उनके सौभाग्य में वृद्धि होती है, पति तथा संतान को किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती है, मूलतः भैरव प्रयोग, रक्षा प्रयोग है, पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने वाला साधक एक प्रकार से अपने चारों ओर "रक्षा कवच" बना लेता है, जिससे हर बाधा से उसकी रक्षा होती है।

साधना प्रयोग

साधक विजयादशमी के दिन १७-१०-९१ को स्नान कर लाल धोती धारण कर लें, यदि सर्दी की ऋतु हो तो कंधों पर भी लाल धोती डाल सकते हैं, इसी प्रकार स्त्री साधिका लाल साड़ी धारण कर सकती है।

फिर साधक लाल आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय, और सामने लकड़ी का एक बाजोट रख दें, उस पर लाल वस्त्र बिछा दें, और उस बाजोट पर स्टील या लोहे की थाली रख दें, फिर इस थाली के मध्य में कुंकुम से या ज्यादा अच्छा यह हो कि सिन्दूर से अपनी उंगली या तिनके से "ॐ भं भैरवाय नमः" लिख दें, फिर इस थाली के मध्य में "काल भैरव यंत्र" को स्थापित कर दें।

इस पूरी साधना में यंत्र ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और इसका निर्माण पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न किया जाना चाहिए, यह यंत्र निम्न १२ प्रयोगों से सिद्ध होना आवश्यक है, यही इसकी प्राण प्रतिष्ठा का मूल आधार है, ये बारह प्रयोग हैं— १- काल भैरव प्रयोग, २-नीलकण्ठ भैरव प्रयोग, ३-तीक्ष्णदंष्ट्रकाल भैरव प्रयोग, ४-दण्डपापण्य प्रयोग, ५- विक्रम प्रयोग, ६- स्वर्ण सिद्धि प्रयोग, ७- मृत्यु दर्पनाशन प्रयोग, ८- शत्रु स्तम्भन प्रयोग, ९- कर्म पाश मोचक प्रयोग,

१०- अष्ट सिद्धि प्रयोग, ११- कृष्ण मोचक प्रयोग, १२- अकाल मृत्यु निवारक प्रयोग।

ये सारे अनुष्ठान अब तक गोपनीय रहे हैं, पूज्य गुरुदेव ने अपने निर्देशन में इस विशेष विजयादशमी हेतु ऐसे महायन्त्र तैयार करवाये हैं, जो कि बहुत कम संख्या में तैयार हो पायेंगे और जो महायन्त्र बनेंगे वे अपने आप पूर्ण प्रभावदायक तथा उपरोक्त द्वादश प्रयोगों से सम्पन्न पूर्ण फलदायक हैं।

ऐसा महायन्त्र उस थाली में स्थापित करके, उस यन्त्र पर सिन्दूर की ५२ बिन्दियां लगावें, जो कि ५२ भैरव की प्रतीक होती हैं, फिर उस पर लाल पुष्प चढ़ावें, इस प्रकार का पूजन कार्य करते समय "ॐ भं भैरवाय नम:" मन्त्र का उच्चारण करता रहे।

शत्रु स्तंभन यंत्र
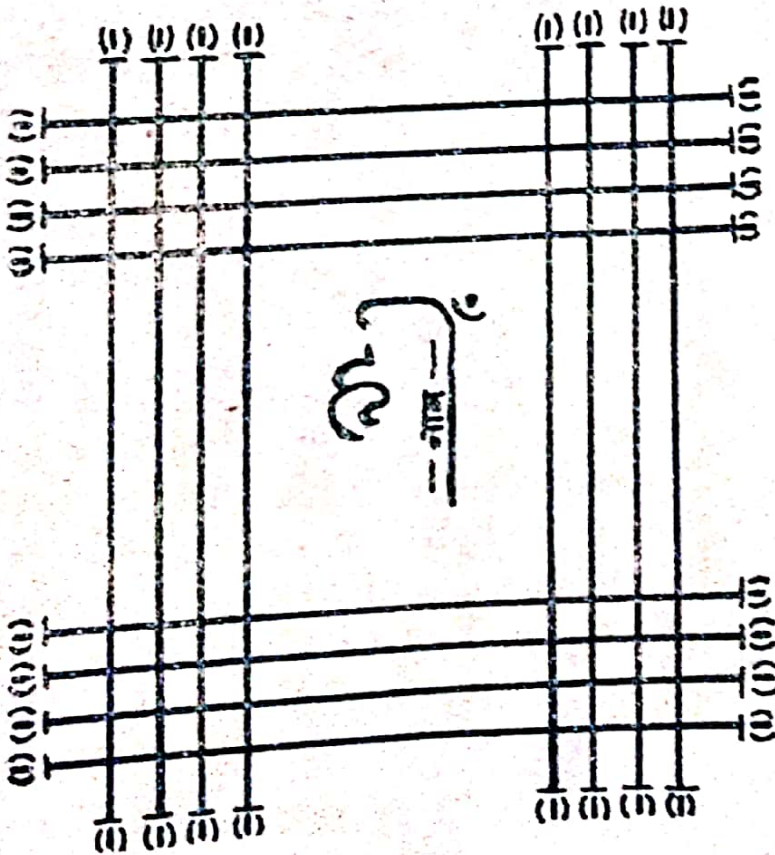
इस प्रकार संक्षिप्त पूजा समाप्त करने के बाद भैरव के सामने एक कटोरी में घी और गुड़ मिला कर भोग लगावें और तेल का दीपक जला दें, फिर उसके सामने निम्न स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करें, यह अपने आप में स्तोत्र होते हुए भी मन्त्र के समान प्रभावदायक है, इसी लिए इसको स्तोत्र मन्त्र कहा गया है, इसमें हकीक माला का या मूंगे की माला का प्रयोग किया जाता है।

भैरव स्तोत्र

यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्ति शिरमुकुट जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख मुखं उर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।

उपरोक्त स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करने के बाद साधक आसन से उठ जाय, पर भैरव के सामने जो भोग लगा हुआ है वह रहने दे और तेल का दीपक बराबर जलते रहना चाहिए।

इसी दिन रात्रि को लगभग ९ बजे के बाद वह भोग जहां तीन रास्ते मिलते हों, वहां ले जाकर रख दें, यदि दीपक ले जाते समय मार्ग में बुझ जाय तो वहीं तीन रास्तों पर वह दीपक रख कर पुनः माचिस से जला सकते हैं, और फिर लौट कर आ जायें, दीपक और भोग रखने के बाद पीछे मुड़ कर नहीं देखें और घर में आ कर स्नान कर कपड़े बदल लें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, उस "काल भैरव महायंत्र" को घर में किसी भी स्थान पर रख सकते हैं, वह महायन्त्र निश्चय ही घर की, व्यापार की, परिवार की और बाल बच्चों की सभी दृष्टियों से पूर्ण रक्षा करता है।

अष्ट लक्ष्मी युक्त

पाञ्चजन्य शंख

जिसका प्रयोग

दीपावली पर ही होता है

शंख की महिमा और महत्व प्रत्येक अनुष्ठान में विशेष रूप से है, यह तो विष्णु के चार आयुधों में प्रमुख है, प्रत्येक विशेष पूजा में शंख द्वारा अभिषेक का महात्म्य है, इसकी ध्वनि को पवित्रतम माना गया है।

लक्ष्मी से सम्बन्धित जितने भी प्रयोग हैं, वे दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग की तुलना में हलके ही हैं, शुद्ध श्रेष्ठ दक्षिणावर्ती शंख तो अष्ट लक्ष्मी का सहोदर है।

दक्षिणावर्तशंखोयं यस्य सद्मनितिष्ठति। मंगलानि प्रकुर्वन्ते तस्य लक्ष्मीः स्वयं स्थिरा॥
चन्दनागुरुकर्पूरैः पूजयेद् यो गृहेऽन्वहम्। स सौभाग्ये कृष्णसमो धने स्याद् धनदोपमः॥

अर्थात् यह उत्तम दक्षिणावर्ती शंख जिसके घर में रहता है, वहां सब मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर हो कर निवास करती है, जिस घर में चन्दन, कपूर, से उत्तम शंख की पूजा होती है, वह कृष्ण के समान सौभाग्यशाली तथा धनपति बन जाता है।

ऐसी सुन्दर इसकी महिमा है, कि इस सम्बन्ध में हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं, और ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं हो सकता, जिसने दक्षिणावर्ती शंख अपने घर में स्थापित किया हो, और उसे पूर्ण फल प्राप्ति नहीं हुई हो, क्योंकि चन्द्रमा के अमृत मण्डल से सिंचित, समुद्र से उत्पन्न, अंतरिक्ष, वायु और ज्योतिमण्डल को अपने भीतर सजाने वाला यह विशिष्ट शंख, शत्रुओं को निर्बल करने वाला, रोग, अज्ञान, अलक्ष्मी को दूर भगाने वाला और आयु का वर्धक है, इसकी तो ध्वनि ही उत्तम है, **ब्रह्मवैवर्त पुराण** में एक आख्यान आया है कि—

शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतन्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गंगा सरस्वतीम्॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मा शंखं प्रपूजयेत्॥
दर्शनेन हि शंखस्य किं पुनः स्पर्शनेन तु। विलयं यान्ति पापानि हिमवद् भास्करोदयेः॥

यह शंख तो चन्द्रमा और सूर्य के समान देव स्वरूप है, इसके मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा और अग्र भाग में गंगा का निवास है, शंख में सारे तीर्थ विष्णु आज्ञा से निवास करते हैं, और यह कुबेर स्वरूप है, अतः इसकी तो पूर्ण पूजा अवश्य करनी चाहिए, इसके दर्शन मात्र से सभी दोष ऐसे नष्ट हो जाते हैं, जैसे सूर्योदय होने पर बर्फ पिघल जाती है, फिर स्पर्श की तो बात ही क्या है !

दक्षिणावर्ती शंख ही क्यों ?

जैसा कि ऊपर मैंने लिखा, कि दक्षिणावर्ती शंख के बारे में प्रत्येक ज्ञानी, सिद्ध पुरुषों ने अवश्य ही विशेष महिमा वर्णित की है, इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों से प्रामाणिक पंक्तियां निम्नवत् हैं —

१– लक्ष्मी को प्राप्त करना और उसे स्थायी रूप से घर में निवास देने का एक मात्र प्रयोग दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग ही है, जो कि अपने आपमें आश्चर्यजनक रूप से धन देने में समर्थ है, इसके माध्यम से ऋण, दरिद्रता, और अभाव मिट जाता है, तथा सभी दृष्टियों से पूर्णता और सम्पन्नता आ जाती है।

— महर्षि पुलस्त्य–"पुलस्त्य संहिता" से

२– यों तो मैंने अपने जीवन में लक्ष्मी से सम्बन्धित सभी प्रयोग सम्पन्न किये हैं, पर दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है, अपने आप में अद्वितीय है, धन-वर्षा करने और सुख-समृद्धि प्रदान करने में उसकी कोई तुलना नहीं है।

—महर्षि विश्वामित्र– "विश्वामित्र संहिता" से

३– दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग सभी प्रकार से दरिद्रता, दुख, दैन्य और अभाव को मिटाने में समर्थ है, यह जीवन में आश्चर्यजनक रूप से धन प्रदान करने और पूर्ण सफलता देने में समर्थ है, यह एक मात्र प्रयोग है जो आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्रदान करता है।

—"लक्ष्मी संहिता" से

४– भगवती लक्ष्मी के सभी प्रयोगों में दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग ही प्रामाणिक और धन वर्षा करने में समर्थ है, यह प्रयोग उज्जवल रत्नों का सागर है।

—महर्षि मार्कंण्डेय

५– यदि दक्षिणावर्ती शंख कल्प मिल जाय और फिर भी व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न नहीं करे तो वह वास्तव में अभागा ही कहा जायेगा, यह तो जीवन का सौभाग्य है, सत्कर्मों का उदय है, लक्ष्मी प्राप्ति का सर्वोत्तम उपाय है।

— भगवत्पाद शंकराचार्य

६– दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग श्रेष्ठ तांत्रिक प्रयोग है, जिसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, मैंने इस प्रयोग को किया है और अपने शिष्यों को सम्पन्न करवाया है, हर बार मुझे इसके द्वारा पूर्ण सफलता मिली है।

— गुरु गोरखनाथ "गौरक्ष संहिता" से

दक्षिणावर्ती शंख : स्वरूप

यह महत्वपूर्ण शंख त्रिवली युक्त अर्थात् जिस पर तीन सुन्दर धारियां छिपे रूप में, अथवा प्रगट रूप में हों, इसका रंग कबूतर की तरह श्वेत हो, वजन में भारी हो, तथा दक्षिण की ओर मुंह खुला हो, वही शंख दक्षिणावर्ती कहलाता है, इसे भी जाग्रत करना पड़ता है, शंख ले कर सीधे उसकी पूजा करने से लाभ प्राप्त नहीं होता है, इसे विशेष मन्त्रों से आभूषित करना होता है, और **"अष्टोत्तर लक्ष्मी प्रयोग" से सम्पन्न एवं अष्ट**

लक्ष्मी मन्त्र सिद्ध, कुबेर मन्त्रों से आपूरित प्राण प्रतिष्ठा युक्त" शंख ही साधक के लिए पूर्ण फलदायक रहता है।

पूज्य गुरुदेव की कृपा का तो कोई अन्त ही नहीं है, अपने जीवन में हजारों तीर्थ स्थानों, दुर्गम्य जलधाराओं, नदी, समुद्रों के किनारे पूज्य गुरुदेव ने जो शंख एकत्र किये उस सम्बन्ध में उन्होंने इस बार कह दिया, कि इन सभी अद्वितीय शंखों को विशेष प्रयोगों से प्राण प्रतिष्ठा कर साधकों को दे दिया जाय, और तभी आपको इस सम्बन्ध में सूचना देने की हिम्मत बन पड़ी है।

दक्षिणावर्ती शंख कल्प के सम्बन्ध में इसी नाम से रचित महाग्रन्थ में लिखा है, कि—
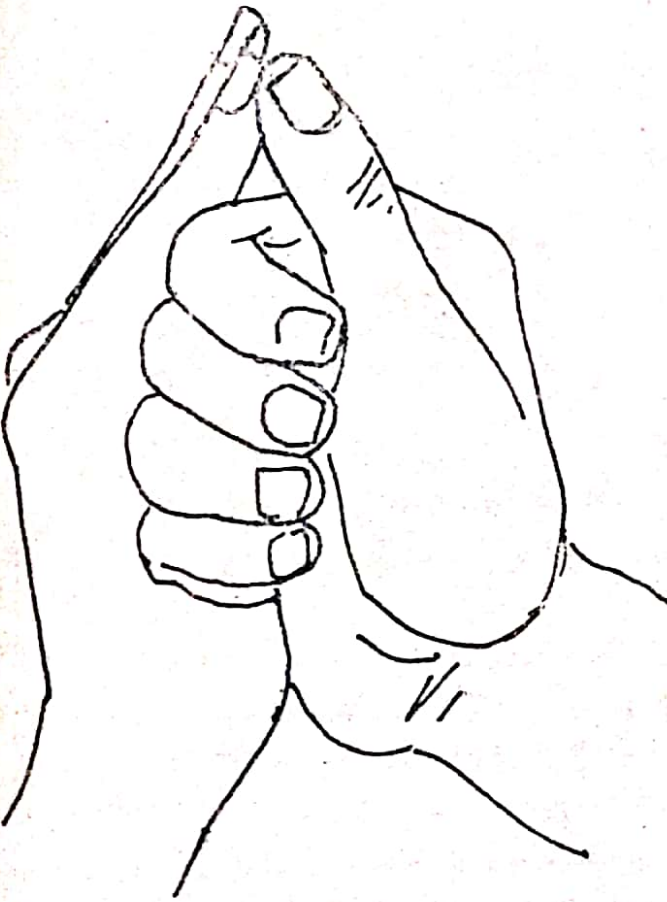
शंखम्

१– दक्षिणावर्ती शंख भगवान विष्णु का आयुध होने के कारण अत्यन्त मंगलमय है, और श्रेष्ठ पुरुष ही पूर्व पुण्यों के योग से इसे प्राप्त करता है।

२– यह शंख जिसके पास रहता है, उसके तो राजा भी वश में रहते हैं, और साधक कभी भी धन-धान्य से रहित नहीं हो सकता है।

३– भूत, प्रेत पिशाच, ब्रह्म राक्षस, जहां यह विशेष प्राण प्रतिष्ठा युक्त शंख रहता है, वहां रह ही नहीं सकते हैं।

४– इसकी पूजा करने वाले की आकस्मिक मृत्यु, दुर्घटना का प्रभाव स्वतः दूर हो जाता है।

५– शत्रु कितना भी विरोध करें, बाधाएं पहुंचाने का प्रयास करें, हानि नहीं पहुंचा सकते हैं।

६– अग्नि अथवा चोरी का भय नहीं रहता और सर्वत्र शुभ ही शुभ होता है।

निश्चय ही ऐसे बहुमूल्य शंख बहुत कम संख्या में उपलब्ध हैं इन पर पूजा विधान, प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान सम्पन्न हो रहा है, प्रत्येक विशिष्ट शंख पर केवल अनुष्ठान का व्यय ही १२५१)रु० आया है, और पत्रिका सदस्यों को इसी धनराशि पर पूज्य गुरुदेव का यह उपहार भेजा जायेगा।

जो भी साधक इच्छुक हों वे पूज्य गुरुदेव के नाम पर पत्र लिख कर पहले से सूचित कर दें, उनकी आज्ञा से ही यह शंख भेजा जा सकेगा, और साथ में सम्बन्धित धनराशि अवश्य भेज दें, किसे प्रदान करना है और किसे प्रदान नहीं करना है, यह तो पूज्य गुरुदेव ही निर्णय करेंगे, पत्रिका कार्यालय तो इस शंख के रूप में पूज्य गुरुदेव का यह अमृत प्रसाद-मंगलकारक शंख, सम्बन्धित शिष्यों, साधकों को सुरक्षित रूप से भेजने की व्यवस्था मात्र करेगा।

पूजा सामग्री

मुख्य सामग्री तो दक्षिणावर्ती शंख ही है, इसके अतिरिक्त अगरबत्ती, शुद्ध घी का दीपक, कुंकुम, केसर, चावल, जल पात्र, कच्चा दूध, चांदी का वर्क, इत्र, कपूर, नैवेद्य (प्रसाद) इत्यादि की व्यवस्था पहले से ही कर लें, जिससे कि पूजन के समय बार-बार उठना न पड़े।

पूजा विधान

दक्षिणावर्ती शंख की पूजा मूल रूप से **धनत्रयोदशी** के दिन ३-११-६१ को सम्पन्न करें।

धनत्रयोदशी के दिन प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक पात्र में इस शंख को कच्चे दूध से धो दें फिर शुद्ध जल से स्नान करा कर एक साफ कपड़े से पौंछ कर इस पर चांदी का वर्क लगायें, फिर घी का दीपक और अगरबती जला दें तथा केसर से शंख पर "श्रीं" लिखें, अब इस मंगलकारक शंख को तांबे के पात्र अथवा चांदी के पात्र में अपने सामने स्थापित करें, तथा निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए इस पर कुंकुम, चावल, इत्र चढ़ायें और दूध का प्रसाद भोग के रूप में अर्पित करें, सुगन्धित श्वेत पुष्प चढ़ायें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः ॥

अब अपने दोनों हाथ जोड़ कर इस लक्ष्मी भ्राता-इच्छापूर्ति शंख का ध्यान करें, यह ध्यान शान्त मन से सम्पन्न करें—

ध्यान मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रीदक्षिणावर्तशंखाय भगवते विश्वरूपाय सर्वयोगीश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकामप्रदाय सर्वऋद्धि समृद्धि वाञ्छितार्थसिद्धिदाय नमः ।

ॐ सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्यांगोपांगसंयुताय कल्पवृक्षाधः - स्थिताय कामधेनु - चिन्तामणि - नवनिधिरूपाय चतुर्दशरत्नपरिवृताय महासिद्धि-सहिताय लक्ष्मीदेवतायुताय कृष्णदेवताकर-ललिताय-श्री शंखमहानिधये नमः ॥

यह ध्यान मन्त्र-आह्वान मन्त्र है, स्तुति मन्त्र है, अब बीज मन्त्र का जप करना आवश्यक है, पांच माला नीचे लिखे बीज मन्त्र का जप करें—

मूल मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण मुखाय शंखानिधये समुद्रप्रभावय नमः ॥

पूज्य गुरुदेव का कहना है, कि यह विशेष शंख दीपावली की रात्रि के पूजन समय तक अर्थात् धनत्रयोदशी से दीपावली तक इसे इसी पात्र में पूजा स्थान में रखा रहना चाहिए, उसके पश्चात् लक्ष्मी का ध्यान कर इस विशिष्ट शंख को जहां धन, आभूषण इत्यादि रखते हैं, उस स्थान पर इसे लाल कपड़े में लपेट कर रखना चाहिएं।

ऐसा सुन्दर सौभाग्य तो बिरलों को ही प्राप्त होता है, जो साधक दक्षिणावर्ती शंख सिद्ध कर लेता है, उसको जीवन में हर क्षेत्र में निरन्तर "श्री" ही प्राप्त होती रहती है। ★

गारण्टी : इस प्रकार का दुर्लभ शंख प्राप्त होने के बाद पन्द्रह दिनों के भीतर-भीतर यदि आपको पसन्द न आवे तो आप वापिस लौटा सकते हैं, आपको पूरी रकम सुरक्षित रूप से मिल जायगी, यह हमारी ओर से आपको गारण्टी है।

मां भगवती भवानी जगदम्बा ! शत् शत् वन्दे

— नवरात्रि का यह शक्ति साधना पर्व
— जिसमें पूरे नौ दिन अक्षुण्ण हैं-पूर्ण नवरात्रि
— ऐसा शक्ति उत्सव कई वर्षों बाद
— मां भगवती की साकार साधना
— नव शक्तियों की आराधना इसी शक्ति पर्व में
— अणु-अणु में शक्ति भर देने की प्रक्रिया
— तन-मन से विकार मिटा देने की साक्षात् साधना
— पूर्ण रूप से प्रबल बनने की क्रिया

जीवन को जीना है, तो वीर भाव से जीना है,
इस शक्ति पर्व में मां से प्राप्त करेंगे यह सब कुछ,
समर्पित कर देंगे अपने-आपको, यह दृढ़ संकल्प है हमारा,
मां को देना ही पड़ेगा पूर्ण आशीर्वाद,
क्योंकि हमारी शक्ति-साधना में कोई कमी नहीं रहेगी

— गुरुदेव खोलेंगे साधना के वे पृष्ठ, जो अब तक छिपे थे,
— प्रत्येक शिष्य, शिष्या को प्रदान की जायेगी, **'शक्ति-तत्व जागरण चैतन्य दीक्षा'**
— मिट्टी के दिये में सूर्य की शक्ति भर देने की क्रिया
— शक्ति का तात्पर्य है, श्री, ऐश्वर्य, सौभाग्य, आनन्द, पराक्रम, बुद्धि और बल
— और यही **"शक्ति साधना पर्व"** का तात्पर्य है

आह्वान है पूज्य गुरुदेव का

पुकार है शिष्य की, साधक की

बल है मां भगवती जगदम्बा का

अपने भीतर उठती हुई आवाज को रोकना नहीं है

उपस्थित होना ही है

इस शक्ति पर्व में, जिससे कुछ भी अधूरा न छूट जाय

Scanned by CamScanner

प्रिय साधक,

नवरात्रि पर्व "शक्ति साधना" पर्व है, इस महोत्सव में पूज्य गुरुदेव कुछ विशेष प्रक्रियाएं सम्पन्न कराने जा रहे हैं।

यह वसन्त पर्व जीवन में प्राण शक्ति, क्रिया शक्ति, योग शक्ति के नये अंकुर आपके जीवन में जाग्रत करेगा, इसी दृढ़ निश्चय के साथ आपको आना है।

आपकी उपस्थिति अनिवार्य है, क्योंकि आपने संकल्प लिया है, पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रह कर अपने जीवन को सजाने संवारने का।

इस महापर्व में नव शक्तियों की आराधना, आह्वान किया जायेगा और आप साक्षात् दर्शन करें, तो यह आश्चर्य नहीं होगा, क्योंकि जहां शिष्य संकल्प के साथ है, दृढ़ निश्चय है, साक्षात् गुरु, साधना-ज्ञान दे रहे हैं, शक्ति का प्रवाह आपकी ओर मोड़ रहे हैं, वहां कुछ भी असंभव नहीं है।

इस बार भी यदि आपकी नींद न खुली, तो फिर कब खुलेगी ? शक्ति प्राप्त करने का यह अवसर कहीं चूक न जांय।

ऐसे दिव्य शक्ति पर्व पर प्रत्येक शिष्य, साधक की उपस्थिति अनिवार्य है, गुरु आज्ञा है, हमारा निमन्त्रण है, आपको आना ही है।

विशेष

यह शक्ति पर्व नवरात्रि शिविर (दिनांक ८-१०-९१ से १६ १०-९१ तक) गुरुधाम जोधपुर में सम्पन्न किया जायेगा।

आपको एक दिन पहले अर्थात् ७-१०-९१ को ही जोधपुर पहुंच जाना है, जिससे समय से आप अपना कार्य कर सकें।

रहने, भोजन इत्यादि की व्यवस्था गुरु आश्रम में ही की गई है, इन नौ दिनों में आप गुरु आश्रम छोड़ कर कहीं नहीं जायेंगे।

शिविर शुल्क मात्र ६६०)रु० है, जिसमें आपकी साधना-सामग्री पैकेट, आवास, भोजन इत्यादि की व्यवस्था हो सकेगी।

समय रहते अपना रिजर्वेशन अवश्य करा लें जिससे असुविधा न हो, यदि वापसी में जोधपुर से रिजर्वेशन चाहते हैं, तो कार्यालय को अभी से लिख भेजें।

यह शक्ति पर्व है, साधना उत्सव है, अतः विनम्र निवेदन है, कि साधना के इच्छुक साधक ही आयें, और अपने समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करें।

पत्र लिख कर अपने आने की सूचना जल्दी से जल्दी भेज दें, जिससे उचित व्यवस्था की जा सके।

पूर्वजन्मकृत दोष निवारण साधना

जब तक किसी भी रोग अथवा बाधा की जड़ तक, उसके मूल कारण तक नहीं पहुंचते हैं, तब तक उसका समाधान नहीं हो सकता है, तात्कालिक उपचार थोड़े समय तक ही लाभकारी हो सकते हैं, पूर्व जन्म और इस जन्म में जाने-अनजाने किये गये दोष ही बाधाओं के मूल कारण हैं, 'पापांकुशा एकादशी' विशिष्ट मुहूर्त है, जब दोष निवारण हेतु पूर्ण प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

जीवन का तात्पर्य ही सुख और शान्ति है, निरन्तर कार्य सिद्ध होते रह सकें इसके लिए महत्व-पूर्ण यह है कि जितना परिश्रम करें उतना लाभ अवश्य ही मिल जाय, जीवन की दौड़-भाग में, कार्यों की पूर्णता ही मानसिक शान्ति प्रदान करती है, लेकिन क्या ऐसा होता है?

सत्य यह है कि अधिकतर लोग अपने जीवन में जो करना चाहते हैं, उसका एक अंश भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं, अपने परिश्रम के फलस्वरूप जो प्राप्त होना चाहिए, जो कार्य सम्पन्न होना चाहिए, जो लाभ मिलना चाहिए, वह लाभ मिल नहीं पाता है, तो अपने भाग्य को दोष देते हैं, ऐसी स्थिति बार-बार बनने पर उत्साह समाप्त हो जाता है, कार्य करने की इच्छा ही मुरझाने लगती है।

व्यक्ति का स्वभाव है, कि वह हमेशा दूसरों के साथ अपनी तुलना अवश्य करता है, जब आप देखते हैं, कि दूसरा आपके आधे प्रयत्न करने पर ही सफलता प्राप्त कर लेता है, तो एक ईर्ष्या का भाव, चिड़चिड़ापन आ जाता है, आप बहुत प्रयत्न करने पर भी परिवार में शान्ति नहीं रख पाते, एक धोखे से उबरते हैं तो दूसरा धोखा मिलता है, आप दूसरों के लिए जितना करते हैं, उसका आधा सहयोग भी दूसरों से नहीं मिल पाता, इन सारे प्रश्नों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, व्यक्ति अपने जन्म के साथ अपने बन्धन

लेकर उत्पन्न होता है, यह बन्धन परिवार के रूप में तो होते ही हैं, इसके अतिरिक्त विशेष बन्धन तो उसके पूर्व जन्म में किये गए शुभ-अशुभ कार्य भी मूल रूप से हैं, वर्तमान जीवन में किये गये कार्यों की तो समीक्षा की जा सकती है, कार्य करने से पहले उसके परिणामों के बारे में थोड़ा विचार किया जा सकता है, प्रयत्न यही रहता है, व्यर्थ में हमारे हाथ से दूसरों को पीड़ा न पहुंचे, कोई ऐसा कार्य न हो, जिसका दोष लगे, शुभ और पवित्र कार्य हो, जिससे जीवन सार्थक हो सके, लेकिन पूर्व जन्म के किये गये कार्यों पर नियन्त्रण कैसे सम्भव है? उसकी तो जानकारी नहीं के बराबर है।

ध्रुव सत्य तो मानना ही पड़ेगा

यह तो निश्चित है, कि जो कार्य करते हैं, उसका परिणाम अवश्य होता है, सौभाग्यशाली लोग अपने जीवन में किये गये अच्छे कार्यों का परिणाम उसी जन्म में प्राप्त कर लेते हैं, जिस प्रकार पूर्व जन्म ध्रुव सत्य है, उसी प्रकार यह भी ध्रुव सत्य है कि पूर्व जन्म के गुण तथा दोष इस जन्म पर अपना प्रभाव निश्चित रूप से डालते हैं, और जो इसे जानते हुए भी अपने कार्यों को गति नहीं देते, वे अपनी आंखों पर पट्टी ही बांध रहे हैं।

पूर्व जन्म कृत दोषों का प्रभाव

कुछ विशेष तथ्य लिख रहा हूं जिसके माध्यम से आप जान सकते हैं, कि पूर्व जन्म के दोष आपको प्रभावित कर रहे हैं, और इसका उपाय आवश्यक है।

१– हर समय स्वास्थ्य बाधा बनी ही रहती है, इलाज करने पर भी उचित परिणाम नहीं प्राप्त होता है।

२– व्यापार में उन्नति के लिए पूंजी पूरी लगाते हैं, प्रयत्न भी पूरा रखते हैं, लेकिन धन-लाभ, जितना होना चाहिए, उसका आधा भी नहीं प्राप्त होता है।

३– जिन व्यक्तियों पर आप विश्वास करते हैं, जिन पर आपको भरोसा है, वे ही आपको धोखा देते हैं, अपनों से ही हानि प्राप्त होती है तो समझ लीजिये कि दोष पूर्व जन्म का है।

४– गृहस्थ जीवन में अनुकूलता नहीं रहती, पति-पत्नी में मतभेद बने रहते हैं, जिस प्रकार से घर का वातावरण आप चाहते हैं, वैसा नहीं रहता।

५– आप अपने प्रयत्नों से शत्रुओं पर हावी रहते हैं, लेकिन एक शत्रु शान्त होता है तो दो नये शत्रु उत्पन्न होते हैं, कुछ न कुछ कुचक्र आप के विरुद्ध चलता ही रहता है।

६– भाइयों से सहयोग प्राप्त नहीं होता, बचपन में जिन से प्रेम था, उन्हीं भाइयों से शत्रुता बन जाय और मतभेद रहे, तो दोष पूर्व जन्म का ही है।

७– संतान का स्वास्थ्य हर समय गड़बड़ रहता हो, संतान आज्ञाकारी न हो, और आपकी अपेक्षा के अनुसार कार्य न करती हो, तो निश्चित रूप से पूर्व जन्म का दोष है।

८– पुत्र संतान का न होना भी निश्चित रूप से पूर्व जन्म कृत दोष ही है।

९– कभी-कभी आकस्मिक रूप से घर में किसी जवान पुत्र-पुत्री अथवा पारिवारिक सदस्य की मृत्यु हो जाय, तो आपको जो मर्मान्तिक पीड़ा पहुंचती है, उसका मूल कारण भी पूर्व जन्म कृत दोष ही है।

१०–लक्ष्मी अर्थात् धन का अभाव हर समय बना रहता है, आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है, और इस कारण कर्ज की स्थिति बन जाती है।

११-जो यश आपको मिलना चाहिए, जो प्रशंसा आपको प्राप्त होनी चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाती, कार्य आप करते हैं, और यश कोई और ही प्राप्त कर लेता है, तो निश्चित ही पूर्व जन्म कृत दोष है।

उपरोक्त स्थितियां होने पर साधक को इसके निवारण का उपाय कर लेना चाहिए, अन्यथा स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती चली जाती है, पूर्वजन्म कृत दोष को पूर्ण रूप से शान्त करने हेतु प्रयोग के दो भाग हैं, पहले भाग में गुरु पूजन एक विशेष विधान से सम्पन्न किया जाता है, इसके पश्चात् दूसरा प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है।

दोष निवारणार्थ गुरु रक्षा प्रयोग

यह प्रयोग गुरुवार को किया जाता है, और आठ गुरुवार तक यह प्रयोग सम्पन्न होता है, गुरुवार के दिन साधक स्नान कर पीली धोती धारण कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पूज्य गुरुदेव का अत्यन्त आकर्षक और सुन्दर चित्र तथा **मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त गुरु यन्त्र** स्थापित करें, उनकी भक्तिभाव से पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें, घी का दीपक लगावें, और स्वयं **"गुरु रुद्राक्ष माला"** धारण कर पूर्ण शुद्ध सात्विक भाव से निम्न प्रयोग सम्पन्न करें—

प्रयोग विधि

साधक तीन बार दाहिने हाथ में जल लेकर पी लें, और उसके बाद हाथ धो कर प्राणायाम करें, और फिर दाहिने हाथ में जल, कुंकुम, पुष्प ले कर निम्न संकल्प करें—

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रस्य अमुक शर्माऽहम् ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत-कारित क्रियमाण कारयिष्य-माण भूत-प्रेत पिशाचादि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र त्रोटकादि-जन्यसकलदोष बाधा निवृत्ति पूर्वक पूर्ण सिद्धि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादि-प्राप्त्यर्थं शम साधना प्रयोगं करिष्ये ।।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें और गले में पहनी हुई रुद्राक्ष माला से गुरु मन्त्र जप करें—

गुरु मन्त्र

।। ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

अब एक माला मन्त्र जप के पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुंह करें और सामने गुरु यन्त्र तथा चित्र स्थापित कर घी का दीपक जला कर अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें —

ॐ योमे पूर्वगत इह गत पाप्मा पापकेनेह कर्मणा अग्नि साक्षी भूतं निखिलेश्वरानन्दम् मम समस्त दोषं पापं भंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कीलयतु तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम (अपना नाम उच्चारण करें) गुरु शान्तिः स्वस्त्ययनचास्तु ।।

अब पूर्व दिशा की ओर मुख किये ही अपने गले में पहिनी गुरु रुद्राक्ष माला से गुरु मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें, फिर अग्नि कोण की ओर मुंह कर पूजन कर संकल्प लें तथा मन्त्र जप करें, इसी प्रकार दक्षिण, नैऋत्य, उत्तर, वायव्य, पश्चिम, ईशान तथा अनन्त (आकाश) की ओर फिर अधः (भूमि) दिशा की ओर प्रयोग करें, पूजन का प्रारम्भिक विधान तो यही रहेगा, लेकिन प्रत्येक दिशा की ओर जप हेतु गुरु मन्त्र अलग-अलग हैं, उन्हीं के अनुसार जप करें, मन्त्र निम्न प्रकार से हैं—

पूर्व दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ श्रीं निखिलेश्वरानन्दाय श्रीं ॐ ।।

अग्नि दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ऐं ऐं निखिलेश्वरानन्दाय ऐं ऐं नमः ।।

दक्षिण दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ ह्रीं परमतत्वाय निखिलेश्वराय ह्रीं नमः ।।

नैऋत्य दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ क्लीं क्लीं निखिलेश्वरानन्दाय क्लीं क्लीं नमः ।।

उत्तर दिशा कृत मन्त्र

।। ॐ श्रीं श्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै श्रीं श्रीं श्रीं नमः ।।

वायव्य दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यायै श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।।

पश्चिम दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ क्रीं निखिलेश्वरानन्दाय क्रीं ॐ ।।

ईशान दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ ह्रीं निखिलेश्वर्यै ह्रीं नमः ।।

अनन्त (आकाश) दिशा कृत मन्त्र

।। ॐ "निं" निखिलेश्वर्यै "निं" नमः ।।

अधः (भूमि) दिशा कृत गुरु मन्त्र

।। ॐ निखिलं निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः ।।

अब साधक दसों दिशाओं से सम्बन्धित प्रयोग सम्पन्न कर पुनः मूल गुरु मन्त्र की एक माला मन्त्र जप पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सम्पन्न करें।

गुरु मन्त्र

।। ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

इस प्रकार एक गुरुवार को अनुष्ठान का प्रथम भाग पूरा होता है, फिर लगातार आठ गुरुवारों को यह प्रयोग सम्पन्न करने से प्राणश्चेतना जाग्रत होती है।

साधना का दूसरा भाग

ऊपर दी गई साधना शान्ति साधना है, इसके साथ-साथ रात्रि को एक विशेष तन्त्र प्रयोग भी सम्पन्न करना पड़ता है, यह तन्त्र प्रयोग, जिस गुरुवार को उपरोक्त शान्ति प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, उसी रात्रि को सम्पन्न करना चाहिए।

रात्रि को १० बजे के पश्चात् पीली धोती पहिन कर साधक पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक तांबे के पात्र में तान्त्रोक्त नारियल रखे और उस पर कुंकुंम की सात बिन्दियां लगायें सामने तीन तेल के दीपक जलायें और निम्न मन्त्र की सात माला का जप करें।

मन्त्र

।। ग्रां ह्रीं क्रों क्लीं हूं ऊं स्वाहा ।।

दूसरे दिन प्रातः इस तान्त्रोक्त नारियल को पश्चिम दिशा की ओर फेंक दें, तथा पूजा में प्रयोग आये तीन मिट्टी के दीपक किसी भी चौराहे के ऊपर फोड़ दें।

इस प्रकार यह प्रयोग भी आठ गुरुवारों को सम्पन्न होगा, जब दोनों प्रयोगों का संगम होता है, तो साधक को असीम शान्ति के साथ एक सिद्धि प्राप्त होने लगती है, जिस प्रकार वस्त्रों को धोने पर उनका मैल निकल जाता है, उसी प्रकार इन दोनों प्रयोगों का संगम साधक के जीवन से दोषों का मैल निकाल कर उसे शुद्ध कर देती है।

जहां विधि-विधान सहित यह प्रयोग सम्पन्न होता है, तथा गुरु यन्त्र-चित्र, गुरु पादुका, पूजन नियमित रूप से सम्पन्न किया जाता है, वहां किसी भी प्रकार का दोष स्थान बना ही नहीं सकता है।

छोटे-छोटे विशेष प्रयोग

जो कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तक

सम्पन्न हो सकते हैं

(२४-१०-९१ से ६-११-९१ तक)

कार्तिक मास तो लक्ष्मी आराधना, साधना, का सर्वोत्तम मास है, लक्ष्मी का स्वरूप धन-धान्य के अतिरिक्त सुख सौभाग्य, वैभव, चिन्ता मुक्ति, शान्ति, आकर्षण, अभीष्ट फल प्राप्ति भी है, इस कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में प्रत्येक साधक को अपनी विशेष मनोकामना पूर्ति हेतु कुछ प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए, जिस फल प्राप्ति के लिए दूसरे समय में सहस्र गुना अधिक प्रयत्न करना पड़ता है, वे ही प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष में सहज ही सिद्ध हो जाते हैं, इस समय लक्ष्मी का विचरण, उनकी प्रसन्नता सहज होती है, और वे साधक को तत्काल अभीष्ट फल, अभीष्ट वर प्रदान करती हैं इसीलिए इस पक्ष का महत्व सर्वोत्तम माना गया है।

पूज्य गुरुदेव ने कृपा कर पत्रिका सदस्यों, साधकों, शिष्यों हेतु कुछ विशेष सरल प्रयोग बताये हैं, उन्हीं प्रयोगों को सार रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, साधक गण निश्चय ही इन प्रयोगों को अपने जीवन का वरदान मानेंगे—

१- लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी दिनांक-२६-१०-९१ को सम्पन्न किया जाना चाहिए, इस शनिवार के दिन प्रातः ११ बजे तक ही तृतीया है, उसके पश्चात् चतुर्थी प्रारम्भ होती है, इस हेतु दिन के ११ बजे के पश्चात् प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए, विशेष बात यह है, कि इस दिन **सर्वार्थ सिद्धि अमृत योग** भी है, ऐसे सुन्दर योग से युक्त दिवस निश्चय ही पूर्ण फल कारक है।

प्रयोग सांयकाल के पश्चात् रात्रि के प्रथम प्रहर में ही सम्पन्न करना है, इस हेतु आवश्यक सामग्री जल पात्र, थाली, नारियल, पुष्प, इत्र, अबीर गुलाल, केसर, त्रिगन्ध, नैवेद्य की व्यवस्था पहले से कर लें, साधना में मुख्य रूप से आवश्यक 'भगवती महालक्ष्मी का सुन्दर चित्र', 'सिद्ध १०८ लक्ष्मी यन्त्र' **और** 'धनदा यन्त्र' है।

साधक अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं लक्ष्मी सिद्धि हेतु, ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु यह १०८ लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, तत्पश्चात् पात्र में दोनों यन्त्र

स्थापित कर कच्चे दूध से स्नान करा कर फिर जल से धो कर पोंछें और दोनों यन्त्रों को दूसरे पात्र में स्थापित करें फिर एक चावल की ढेरी बना कर उस पर कलश स्थापित करें, कलश में दही, अक्षत, जल तथा पीपल के पत्ते डाल कर इस कलश पर दोनों यन्त्र वाला पात्र रखें, तत्पश्चात् अपने सामने घी का दीपक, अगरबत्ती जलायें, अब कलश पर त्रिगन्ध से स्वस्तिक अपने सामने बनायें और बाकी तीन ओर **'श्रीं'** लिखे।

फिर दोनों हाथ जोड़ कर अपने सामने लक्ष्मी का चित्र स्थापित करें और उसका पूजन करें, पूजन में सर्वप्रथम लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है, लक्ष्मी से अपने घर में पधारने हेतु प्रार्थना की जाती है, तत्पश्चात् सभी सामग्री गन्ध, चावल, पुष्प, धूप, दीप, इत्यादि से पूजन सम्पन्न करना चाहिए, जब सब पूजन पूर्ण हो जाय तो नीचे लिखे १०८ लक्ष्मी मन्त्र की ११ माला जप करना चाहिए।

१०८ लक्ष्मी मन्त्र

।। ॐ ऐं ऐश्वर्याधिपति महालक्ष्म्यै ऐं नमः ।।

इस प्रकार अनुष्ठान पूरा हो जाने के पश्चात् साधक लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें, पूजा में रखा हुआ प्रसाद परिवार में वितरित करें, **'धनदा यन्त्र'** को तो घर का मुखिया अपने बांह में बांध ले और **'सिद्ध १०८ लक्ष्मी यन्त्र'** को पूजा स्थान में स्थापित कर दे, जिस कलश का पूजन किया है, उस कलश का जल पूरे घर में पीपल के पत्ते से अवश्य छिड़के।

यह प्रयोग अत्यन्त धनदायक, सिद्धिदायक, है, दूसरे दिन प्रातः से ही इसके चमत्कार का अनुभव होने लगता है।

२- किसी को भी सम्मोहित करने का प्रयोग

यह प्रयोग एक विशेष साबर प्रयोग है, और इस प्रयोग को कार्तिक कृष्ण पक्ष सप्तमी मंगलवार दिनांक २९-१०-९१ को सम्पन्न करना चाहिए, इस दिन रात्रि के प्रथम प्रहर के पश्चात् अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछायें और उस पर काजल से सात लाइनें खींचे, प्रत्येक लाइन पर चावल की एक ढेरी बनायें फिर कपूर और धूप जला दें, लाइनों के बीचोंबीच **वशीकरण यन्त्र** स्थापित करें, जिसे वशीकरण करना है, उसका चित्र हो तो उस चित्र पर उसका नाम लिख कर इस यन्त्र के नीचे रखें, अब नीचे लिखे साबर मन्त्र का १०८ बार जप करें, जप करते समय इस यन्त्र तथा चित्र पर लाल रंग से रंगे हुए चावल के दाने फेंकते रहें।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। मोहिनी मोहिनी कहां चली। बाहर खुदाई काम कन चली। फलानी फलाने को देखै, जरै मरै। मेरे को देखकर पायन पड़े। उलटन्त वेद, पलटन्त कत काया, तोहि श्रीनरसिंह बुला। छू मन्त्र काया, आदेश, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

यहां फलानी फलाने के स्थान पर जिसे वश में करना है, उसका और उसके पिता का नाम लें, यह अत्यन्त तीव्र प्रभावशाली मन्त्र है तथा उस दिन १०८ बार जप करने के पश्चात् तीन शनिवार आगे और यही प्रयोग करना चाहिए, इससे निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है।

३- ग्रह शान्ति का विशेष साबर प्रयोग

यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा गुरुवार दिनांक २४-१०-९१ को सम्पन्न करना चाहिए, जब घर में उन्नति नहीं हो रही हो, धन, संतान की हानि हो रही हो, घर में कोई न कोई बीमारी लगी ही रहती हो, घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग हो, तो यह प्रबल प्रयोग सम्पन्न करने से कितना ही तीव्र दुष्प्रभाव हो, निश्चित रूप से दूर हो जाता है।

इस तांत्रिक प्रयोग में उड़द के दाने तथा पूरे घर में जितने दरवाजे हों, उतनी कीलें तथा तीन विशेष मन्त्र सिद्ध **'गणपति गुटिका'** **'हनुमान गुटिका'** और

'भैरव साबर गुटिका' आवश्यक है, प्रातः ही जल्दी उठ कर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें और अपने पूजा स्थान में एक काले कपड़े पर ये तीनों गुटिकाएं स्थापित करें, पहले गणपति गुटिका का पूजन करें, फिर हनुमान गुटिका का पूजन करें और तत्पश्चात् भैरव गुटिका का पूजन करें, तीनों गुटिका का पूजन करने के पश्चात् एक माला गुरु मन्त्र का जप करें, अपने सामने पूरे पूजन के दौरान कीलें तथा उड़द रखें इस पूजन से ये कीलें अभिमन्त्रित हो जाती हैं।

अब मन्त्र पढ़ते हुए घर के सबसे भीतरी कमरे में प्रवेश करें और यह मन्त्र पढ़ते हुए ही उड़द के दाने फेंकते हुए, कमरे के बाहर निकलें और चौखट पर लोहे की एक कील मन्त्र पढ़ते हुए गाड़ दें, फिर दूसरे कमरे में और फिर तीसरे कमरे में, इस प्रकार प्रत्येक कमरे में यह प्रयोग सम्पन्न करते हुए उस कमरे से बाहर निकलें, बरामदे में तथा आंगन में कील नहीं ठोकनी है, केवल उड़द के दाने बिखेर दें, इस प्रकार क्रिया सम्पन्न करते हुए, घर के मुख्य द्वार तक पहुंचें और वहां एक कील ठोक दें।

मन्त्र

ॐ नमो, आदेश गुरन को, ईश्वर वाचा। अजर बजरी बाड़ा बज्जरी, मैं बज्जरी बांधा दशौ दुवार छवा। और के घालों, तो पलट हनुमन्त वीर उसी कों मारे पहली चौकी गनपती, दूजी चौकी हनुमन्त, तीजी चौकी में भैरों, चौथी चौकी देह, रक्षा करने कों आवे श्रीनरसिंह देव जी। शब्द-सांचा, पिण्ड कांचा, चले मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

इस प्रयोग को सम्पन्न करने से घर का दोष पूर्णतः दूर हो जाता है, किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, भूत-प्रेत दोष दूर हो जाता है।

४- स्वर्णावती प्रयोग (आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए अद्भुत प्रयोग)

यह प्रयोग तीन दिन का है, और कार्तिक प्रतिपदा से अमावस्या तक किसी भी बुधवार को प्रारम्भ किया जा सकता है।

जो साधक इस प्रयोग को करना चाहता है, उसे चाहिए, कि वह बुधवार की रात्रि को लगभग ९ बजे उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, पीले रंग का आसन बिछा ले, और स्वयं भी पीली धोती पहिन कर बैठे।

सामने **लक्ष्मी का चित्र** और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **सियार सिंगी** रख दे, यह अपने आपमें एक अद्वितीय वस्तु होती है, जो कि इस प्रकार के प्रयोग के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण देखी गई है।

सियार सिंगी को किसी पात्र में रखकर उस पर केसर का तिलक करे और फिर सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले, दीपक तेल का होना चाहिए।

ऐसा करने के बाद साधक **'शंख माला'** से या **'स्फटिक माला'** से निम्नलिखित मन्त्र की २१ मालाएं फेरे।

यह मन्त्र पूर्ण प्रभावयुक्त और अपने आपमें अद्वितीय है, तथा कई साधकों ने इसका प्रयोग किया है।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वर्णावती ममगृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ नमः ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब वह माला, सियार सिंगी पर पहना दे, दूसरे दिन भी इसी प्रकार रात्रि को मन्त्र जप करे, तीन दिन तक ऐसा प्रयोग करने पर वह सियार सिंगी और साधना सिद्ध हो जाती है, तब उस सियार सिंगी को किसी अलग डिब्बी में रख दे।

५- भू-गर्भ निधि ज्ञान प्रयोग (जमीन में गड़ी हुई वस्तु को देखने का प्रयोग)

यदि मन में ऐसा विचार हो, कि घर में अमुक स्थान पर संभवतया धन इत्यादि कोई वस्तु गड़ी

है, और प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो, तो भू-गर्भ निधि सिद्धि साधना से यह ज्ञात किया जा सकता है, कि अमुक स्थान पर धन गड़ा हुआ है अथवा नहीं।

यह प्रयोग किसी भी रविवार को इस कार्तिक मास में किया जाना चाहिए, रविवार के दिन प्रातः गुरु पूजन कर **भू-गर्भ दृश्य अंजन** लगाएं और नीचे लिखे मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

सत्यं दर्शय भौमेयं दिव्यं सत्येन दर्शय।
यदि भूमिगतं द्रव्यमात्मानं दर्शय स्वयम्॥

तत्पश्चात् यह अंजन लगा कर अपने सामने पृथ्वी और वाराह भगवान का पूजन कर अपने पैरों पर कुंकुम लगायें, तथा अपने सामने **भू-गर्भ निधि सिद्धि यंत्र** स्थापित कर उसके चारों ओर आठ दिशाओं में लकड़ी की आठ कीलें गाड़ दें, इन आठ कीलों के पास एक-एक **"भूगर्भ सिद्धि लक्ष्मी बीज"** स्थापित करें तथा जल, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य से इन कीलों का पूजन करें, भू-गर्भ निधि सिद्धि यंत्र का पूजन केवल कुंकुम से करें, इसके पश्चात् **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की आठ माला का जप करें, प्रत्येक माला मन्त्र जप के साथ एक कील के पास एक लकीर खींच दें।

मन्त्र

॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय हर हर
हंज हंज स्फुटि स्फुटि निस्रवे स्वाहा॥

इस प्रकार मन्त्र जप के पश्चात् बलि स्वरूप एक पात्र में दही, चावल, सरसों चढ़ाएं, यह अनुष्ठान पूरा होते-होते यह दिखाई देता है, कि अमुक स्थान पर धन है अथवा नहीं, अथवा किस स्थान पर है, इसके पश्चात् ही गहराई से खोदें।

यह प्रयोग कई व्यक्तियों ने सम्पन्न किया है और उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

६- रोग मुक्ति प्रयोग

यदि किसी पुरुष या स्त्री को बीमारी हो और डाक्टरों को समझ में नहीं आ रही हो अथवा इलाज करने पर भी उसमें सफलता नहीं मिल रही हो तो इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है।

मैंने अनुभव किया है, कि यदि इस प्रयोग को किया जाय तो रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है और यदि रोग बड़ा हो, तो दो-तीन बार इस प्रयोग को करने से उसे रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

कार्तिक मास के किसी भी मंगलवार के दिन तांबे के गिलास में पानी भर लें और उसमें **चिरमी के तीन दानें** डाल दें, और फिर उस गिलास को सामने रख कर निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें।

मन्त्र

जै जै गुणवन्ती ! वीर हनुमान ! रोग मिटे और खिले खिलाव। कारज पूरण करे पवन सुत। जो न करे तो मां अंजनी की दुहाई। सबद सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इसके बाद उस पानी को रोगी को पिला दें तथा चिरमी के दानों को उसके चारों ओर घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें, ऐसा करने पर रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है।

मेरा यह अनुभव है किसी को भूत-प्रेत बाधा हो या उसे मिर्गी आ रही हो या रात में बड़बड़ा रहा हो अथवा उसे कोई ऐसी बीमारी हो, जो समझ में नहीं आ रही है, तो इस प्रयोग को अवश्य ही करना चाहिए, यह छोटा सा प्रयोग है, परन्तु इसका असर तुरन्त एवं अचूक होता है, मैंने इस प्रयोग को जितनी बार भी आजमाया है, उतनी ही बार मुझे सफलता मिली है, साधक को चाहिए कि वह अपने पास चिरमी के १०-१५ दाने रखे, और एक बार के प्रयोग में तीन चिरमी के दानों का उपयोग करें, वास्तव में ही यह प्रयोग जन-कल्याण हेतु करना चाहिये। ★

अठारह सिद्धियां

जो पूरे साधना ग्रन्थों की निचोड़ हैं

आपकी इस पत्रिका के अगस्त अंक में अठारह साधनाएं अर्थात् अष्टादश सिद्धियों के सम्बन्ध में सुधीजन पाठकों के जो पत्र प्राप्त हुए हैं, वे पत्र साधना और सिद्धि के प्रति पाठकों की रुचि को स्पष्ट करते हैं, क्या ये सारी साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं ? कैसे ? और कब ?

अगस्त अंक में अष्टादश सिद्धियों के सम्बन्ध में वर्णन देते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि ये सिद्धियां गोपनीय अवश्य रही हैं लेकिन इनकी मौलिकता, प्रामाणिकता आज भी सौ टंच खरी है, यह तो कई साधना ग्रन्थों की निचोड़ हैं, पूज्य गुरुदेव आगे कहते हैं. कि इनमें से अधिकांश साधनाओं को करने से साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत, दृढ़ हो जाता है, उसमें साधना की ऊर्मियां प्रकाशित होने लगती हैं, और चेहरे पर एक विशेष तेज दिखाई देने लगता है, जिससे आप समाज में अपने आपमें ही अलग-थलग और अद्वितीय पुरुष होते हैं, इस लेख ने साधना जगत में निश्चय ही हलचल मचा दी है. पत्रिका में केवल साधना का ऊपरी ताना-बाना दिया हुआ था, और स्पष्ट लिखा था, कि जो भी साधक किसी विशेष साधना के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी चाहते हैं, वे लिख भेजें, जिससे पूर्ण विधि-विधान सहित साधना सम्पन्न की जा सके, लेकिन जो अद्वितीय बनना चाहते हैं, अपने आपको पूर्ण रूप से स्थापित करना चाहते हैं, उनके लिए तो आवश्यक है, कि उन्हें इन सभी साधनाओं की पूर्ण जानकारी हो और वे स्वयं व्यक्तिगत रूप से इसे सम्पन्न करें।

साधक और सद्‌गुरुदेव

प्राचीन समय से ही गुरु-शिष्य परम्परा को विशेष महत्व दिया गया है, चाहे राजा हो या रंक

सभी को अपना घर-परिवार छोड़ कर कुछ वर्ष गुरु आश्रम में शिक्षा-दीक्षा के लिए अवश्य ही बिताने पड़ते थे, आश्रम में बड़े-छोटे, अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं रहता, गुरु अपने शिष्यों को समान रूप से उसकी प्रकृति, उसकी क्षमता देख कर शिक्षा प्रदान करते थे, उसे जीवन क्षेत्र में उतरने के लिए तैयार करते थे, इसी परम्परा के कारण ज्ञान का विकास सही रूप से हो सका।

आज से करीब एक हजार वर्ष पहले सन् ९९२ से भारत पर गुलामी के बादल पड़ने प्रारम्भ हुए और भारतीय संस्कृति का पराभव प्रारम्भ हुआ, लोग भूल गये कि उनका अपना कुछ व्यक्तित्व है, अस्मिता है, अतः ज्ञान, साधना इत्यादि केवल पुस्तकों में बन्द हो कर रह गई, और यही कारण है, कि आज हम इस रूप में हैं, कि मार्ग का ही सही ज्ञान नहीं हो पा रहा है, एक मन कुछ कहता है, तो दूसरे विचार उसे दूसरी ओर ढकेलते हैं, विचित्र विरोधाभासों में जकड़ कर रह गया है, आज का भारतवासी।

पूज्य गुरुदेव ने इसी स्थिति को देखते हुए आश्रम की स्थापना की और साधकों को साधना का प्रेक्टिकल ज्ञान देना प्रारम्भ किया, जिससे वह अपना कर्म करता रहे और साधना के मार्ग पर भी आगे बढ़े, यह लिखना कोई गर्वोक्ति नहीं होगी, कि आज पूरे भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विदेशों तक फैला पूज्य गुरुदेव का सक्षम शिष्य समुदाय इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो घाव, जो बीमारी भीतर तक असर कर गई है, उसे मिटाने के लिए कुछ समय तो लगेगा ही, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये मार्ग पर निरन्तर चलने की।

अठारह सिद्धियों में ही सब कुछ

जिस प्रकार मूर्ति तराशने के लिए शिल्पकार को पत्थर पर हजारों चोटें मारनी पड़ती हैं, और जो पत्थर कल तक केवल पहाड़ का, खान का एक हिस्सा था वही सुन्दर मूर्ति बनने पर मन्दिर में स्थापित कर दिया जाता है, और नित्य-प्रति उसकी पूजा सम्पन्न की जाती है, हर कोई हाथ जोड़ता है, प्रार्थना करता है, ठीक उसी प्रकार ये अठारह साधनाएं, सिद्धियां साधक के जीवन में सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तेज, तराशने के समान हैं, जो सब कुछ भूला हुआ है, उसे चैतन्य करने की प्रक्रिया है, जिस प्रकार शिल्पकार के हाथ एक छेनी और हथौड़ी होती है, पत्थर कभी नहीं कहता कि मुझे यहां चोट मारो, यहां चोट मत मारो, उसी तरह जब साधक अपने आपको सद्गुरुदेव के भरोसे छोड़ देता है, और उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलता है, तो उसे दिव्यता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता।

क्या आप साधना के इच्छुक हैं ?

यदि आपने इन अठारह साधनाओं में से कोई साधना करना निश्चित कर लिया है, अथवा क्रमबद्ध रूप में साधना करना चाहते हैं, तो निःसंकोच लिखें, इसमें आपको निर्णय करने में देरी नहीं लगानी है क्योंकि आपके लिए यही मार्ग आवश्यक है, और सत्य यही है, कि केवल यही मार्ग आपके सामने बचा है, सोचने विचारने में बहुत वर्ष गंवा ही दिये हैं, अब यदि एक दिन भी आपने गंवाया, तो यह आपकी गलती होगी, आपकी खुद की जिम्मेदारी रहेगी।

आपको क्या करना है ?

इतनी बड़ी साधना क्रमबद्ध रूप से करने हेतु, सिद्ध पुरुष बनने हेतु यह आवश्यक है, कि आप स्वयं पत्रिका के आजीवन सदस्य बनें और यदि आप वर्तमान में

पूज्य गुरुदेव आपको व्यक्तिगत रूप से निर्देश देंगे कि आप पहले कौन सी साधना प्रारम्भ करें, कितने दिन तक करें, और एक साधना पूरी हो जाने के पश्चात् दूसरी साधना कब प्रारम्भ करें।

हर व्यक्ति के लिए इन अठारह साधनाओं का क्रम क्या होगा, इस सम्बन्ध में आगे दिया हुआ प्रपत्र भर कर भेज दें—

१- अणिमा, २- महिमा, ३-लघिमा, ४-प्राप्ति, ५-प्राकाम्य, ६- ईशित्व, ७- वशित्व, ८- कामावसायिता, ९- शुद्ध-स्वरूप की प्राप्ति, १०- दूर-श्रवण, ११-दूरदर्शन, १२-मनोजव, १३-स्वेच्छा-वपु, १४-परकायाप्रवेश, १५-इच्छित-मृत्यु, १६-देवक्रीड़ा-दर्शन, १७-संकल्प-सिद्धि, १८-प्रभुत्व।

आजीवन सदस्य हैं, तो अपने किसी मित्र, सम्बन्धी को आजीवन सदस्य बनाएं, यदि आप १५००) रु० सामग्री की कीमत समझ कर भेजते हैं, तो भी आपको यह सामग्री नहीं भेजी जायेगी, इन अठारह सिद्धियों से सम्बन्धित पूर्ण सामग्री तो केवल उपहार स्वरूप ही भेजी जायेगी और इसके लिए आजीवन सदस्य बनना कोई बहुत बड़ी शर्त नहीं है।

प्रपत्र के साथ विस्तार से पत्र अवश्य लिखें कि आप वर्तमान में क्या कर रहे हैं? आप का कार्य समय क्या है? कितने समय से पत्रिका सदस्य हैं? अब तक कितनी साधनाएं सम्पन्न की हैं? दिन प्रतिदिन साधना हेतु कितना समय दे सकते हैं? जीवन की समस्याएं क्या हैं? किस समस्या का प्राथमिकता के रूप में अर्थात् सबसे पहले समाधान करना चाहते हैं? उम्र, पारिवारिक स्थिति क्या है? ये सभी बातें समझ कर ही पूज्य गुरुदेव आपके लिए निर्णय करेंगे।

प्रपत्र

मैं...शपथ ले कर यह प्रण करता हूं कि अपने जीवन में कुछ बनने के लिए, ये अठारह सिद्धियां सम्पन्न करना चाहता हूं, इस हेतु सम्बन्धित सारी सामग्री मुझे भेज दी जाय।

साधना से सम्बन्धित निर्देशों का मैं पूर्ण रूप से पालन करूंगा तथा १५००) रु०+डाक खर्च की वी०पी० छुड़ाने का वायदा करता हूं। वी०पी० छूटते ही मुझे आजीवन सदस्यता प्रदान कर दी जाय, और पूरे जीवन मुझे निःशुल्क पत्रिका भेजी जाय।

मेरी सदस्यता संख्या......................

मेरा पूरा नाम...

मेरा पूरा पता...

....

यदि आप किसी अन्य को आजीवन सदस्य बना कर यह **"अष्टादस सिद्धि पैकेट"** प्राप्त करना चाहते हैं, तो उसका नाम व पूरा पता नीचे लिखे प्रपत्र के अनुसार भेजें।

मेरी सदस्यता संख्या......................

मेरा पूरा नाम...

मेरा पूरा पता...

....

मुझे १५००) रु०+डाक खर्च की वी०पी० से उपरोक्त सम्पूर्ण साधना सामग्री भेज दी जाय, तथा वी०पी० छूटने पर नीचे लिखे व्यक्ति को आजीवन सदस्य बना दिया जाय—

मित्र का नाम...

पूरा पता...

....

● यह ध्यान रहे कि इस प्रपत्र को भर कर भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अक्टूबर १९९१ ही है, अतः आपको जो निर्णय करना है, समय रहते निर्णय करके सूचना अवश्य दे दें। ★

●● जनवरी ९२ से आजीवन सदस्यता शुल्क २४००)रु० हो रहा है।

नवरात्रि साधना सिद्धि प्रयोग

उन साधकों के लिए

जो किसी वजह से नवरात्रि शिविर में सक्रिय भाग न ले सकें

आदि शक्ति भगवती दुर्गा के सम्बन्ध में सर्वाधिक ग्रन्थों की रचना हुई है, पूरे भारतवर्ष में ऐसा कोई देश-प्रदेश नहीं होगा, जहां किसी न किसी रूप में मां दुर्गा का आह्वान नवरात्रि के अवसर पर नहीं किया जाता हो, यह पर्व तो शक्ति, साधना, सौभाग्य का महापर्व है जहां साधक सब कुछ भूल कर मां दुर्गा की स्तुति में, भक्ति में, पूजा में अपने आपको लीन कर देता है, शरीर और मन दोनों के कष्टों का पूर्ण रूप से निवारण मां के चरणों की पूजा में ही निहित है।

वेदोक्त ग्रन्थों में और उसके पश्चात् की रचनाओं में जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, होली के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन दिया हुआ है, अथवा नहीं के बराबर है, उन्हीं महान ग्रन्थों में शारदीय नवरात्रि के सम्बन्ध में अत्यन्त विस्तार से विधान दिया हुआ है, क्योंकि मां दुर्गा तो आद्या शक्ति हैं, विष्णु की पालन शक्ति, ब्रह्मा की सृजन शक्ति और रुद्र की संहार शक्ति हैं, शक्ति का प्रत्येक तत्व इसी महाशक्ति से उत्पन्न हुआ अंश है, इसीलिए शारदीय नवरात्रि को **शक्ति पर्व** कहा गया है, और विशेष पूजा का विधान है।

शारदीय नवरात्रि के सम्बन्ध में लिखा है, कि—

शरद्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्य ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः॥
सर्व बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य समन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

अर्थात्, शरद कालीन इस महान नवरात्रि पूजन का महत्व अत्यन्त महान है, इस महापूजा से साधक सब बाधाओं से विमुक्त हो जाता है, और धन-धान्य, सौभाग्य की प्राप्ति होती है, मनुष्य के भविष्य को उज्ज्वल करने वाली इस महापूजा के सम्बन्ध में कोई संशय नहीं है।

नवरात्रि का फल तो पूर्ण रूप से गुरु-सामीप्य में साधना करने से ही प्राप्त होता है, क्योंकि गुरु तो शक्ति के साक्षात् स्रोत होते हैं, और पूजा में, साधना में, सद्गुरुदेव अपना अंश साधक को प्रदान करते हैं, **देवी रहस्य तन्त्र** में लिखा है, कि—

तांत्रोक्त नवरात्रि स्यात् गुरोरं व च साधकः।
स सिद्ध सफल पूर्ण दुर्लभः प्राप्यते क्षणः॥

गुरौ सिद्धि गुरो पूर्ण शक्ति पीठस्तथै व च ।
यस्य साधक सौभाग्य पूर्ण सिद्ध न संशयः ।।

अर्थात् दुर्लभ योगों से सम्पन्न **"सिद्धेश्वरी नवरात्रि"** यदि साधक के जीवन में सौभाग्य से प्राप्त हो जाय, और यदि उसे सिद्ध गुरु का सम्पर्क-साहचर्य प्राप्त हो जाय, तो, इससे बड़ा सौभाग्यशाली साधक हो ही नहीं सकता, गुरु ही सिद्धि है, गुरु ही पूर्ण है, और जहां गुरु का निवास है, साधक के लिए वही शक्ति पीठ है, यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर, साधक गुरु के समीप बैठ कर, साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह सौभाग्यशाली है, और साधना सम्पन्न करने पर वह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं।

मन यहां तन वहां तो क्या करें ?

पूज्य गुरुदेव के हर शिष्य की यह इच्छा रहती है, कि वह तीन अवसरों पर "गुरु जन्म दिवस", "गुरु पूर्णिमा," तथा नवरात्रि पर गुरुधाम अवश्य जाय, और गुरु चरणों में अपना समय, गुरु आज्ञा से सम्पन्न करे, लेकिन व्यक्ति जो चाहता है, वह सब कुछ तो सम्भव नहीं है, सांसारिक चक्र में उसे कई प्रकार के बन्धनों का पालन करना पड़ता है, और चाह कर भी गुरुधाम नहीं पहुंच पाता है, तो क्या करें ?

जह मन की गति अबाध है, गुरु कृपा प्राप्त करने की इच्छा है, और अपने जीवन को शक्तिवान बनाने का दृढ़ संकल्प है, ऐसे शिष्यों का भी पूज्य गुरुदेव पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं।

जो इस महापर्व पर न आ सकें, उनके लिए पूज्य गुरुदेव ने जो विधान बताया है, उसे आगे के पृष्ठों में विस्तार से स्पष्ट किया जा रहा है।

नवरात्रि साधना विधान

इस वार नवरात्रि में पूरे नौ दिन अक्षुण्ण हैं, इसीलिए यह पूर्ण नवरात्रि पर्व है, ऐसा सिद्ध मुहूर्त कई वर्षों बाद आया है, इन नौ दिनों में साधक को नौ साधनाएं सम्पन्न करनी हैं, प्रत्येक साधना के लिए अलग-अलग विधान है, मन्त्र है, और क्या करना है, किस प्रकार करना है, वह निम्न प्रकार से है—

प्रथम दिवस

आश्विन शुक्ल १ **मंगलवार दिनांक ८-१०-९१** को नवरात्रि का प्रथम दिवस है, इस दिन घट स्थापना कर दुर्गा पूजा का आह्वान किया जाता है, उस दिन शक्ति से सम्बन्धित सभी प्रयोग करने हैं, शत्रु बाधा-शान्ति, शत्रु स्तम्भन, विवाद-विजय प्रयोग सम्पन्न करने का यह दिवस है।

द्वितीय दिवस

आश्विन शुक्ल २ **बुधवार ९-१०-९१** चित्रा नक्षत्र, तुला के चन्द्रमा से युक्त **लक्ष्मी दिवस** है, इस दिन लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना सम्पन्न करनी है, इसमें लक्ष्मी प्राप्ति, लक्ष्मी स्थायित्व, ऋण समाप्ति, आर्थिक उन्नति, भौतिक सुख-सम्पन्नता में वृद्धि हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न किया जाना है।

तृतीय दिवस

आश्विन शुक्ल ३ **बृहस्पतिवार दिनांक १०-१०-९१** को स्वाति नक्षत्र तथा स्थिर योग है, और यह नवरात्रि का **कीर्ति दिवस** है, इस दिन यश प्राप्ति, उन्नति, प्रशंसा, सहयोग हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए, धन का जितना महत्व है, उससे अधिक महत्व व्यक्ति के यश, सम्मान और कीर्ति का है, इस दिन का विशेष महत्व है।

चतुर्थ दिवस

आश्विन नवरात्रि ४ **शुक्रवार दिनांक ११-१०-९१** को वृश्चिक के चन्द्रमा से युक्त **सौन्दर्य सिद्धि, भौतिक सिद्धि तथा कार्य सिद्धि दिवस** है, इस दिन कार्य सिद्धि से

सम्बन्धित विशेष प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसमें रुके हुए कार्य, वशीकरण साधना, सम्मोहन साधना, इत्यादि सम्पन्न की जाती है।

पंचम दिवस

आश्विन नवरात्रि ५ **शनिवार दिनांक १२-१०-९१** को उपांगललिता दिवस है, जो जीवन को क्रिया शक्ति सिद्धि दिलाने की देवी है, इस दिन क्रिया-योग, जिससे शरीर का अणु-अणु चैतन्य हो जाता है, व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से अपने जीवन के कार्य सम्पन्न करने में समर्थ रहता है, दूसरों के आधीन नहीं रहना पड़ता, ऐसी **उपांग-ललिता साधना** इस दिन सम्पन्न करनी है।

षष्टम दिवस

आश्विन नवरात्रि ६ **रविवार दिनांक १३-१०-९१** यह दिवस कुण्डलिनी जागरण दिवस है, भीतर से जागृति उत्पन्न होने पर ही साधक पूर्ण शिवत्व को प्राप्त कर सकता है, और इस दिवस को अपने भीतर पूर्ण चेतना उत्पन्न कर, मूलाधार से सहस्रार तक चैतन्य करने की प्रक्रिया का यह शुभ दिवस है।

सप्तम दिवस

आश्विन नवरात्रि ७ सोमवार दिनांक १४-१०-९१, यह नवरात्रि दिवस है और विशेष बात यह कि सरस्वती सिद्धि दिवस भी है, इस दिन वाणी, ज्ञान, प्रभाव, बुद्धि से सम्बन्धित सिद्धि प्राप्त करने का दिवस है, अपने बालकों को भी इस दिन विशेष प्रयोग सम्पन्न कराना चाहिए।

अष्टम दिवस

आश्विन नवरात्रि ८ मंगलवार दिनांक १४-१०-९१, स्वाति के बुध से युक्त, धनु के चन्द्रमा से ओत-प्रोत **लक्ष्मी योग** से सम्पन्न दिवस है, इस दिन व्यापार, आकस्मिक धन लाभ, व्यापार में वृद्धि, बिक्री में वृद्धि, नया व्यापार प्रारम्भ करने, व्यापार विस्तार से सम्बन्धित साधना सिद्धि हेतु प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

नवम दिवस

आश्विन नवरात्रि ९, **बुधवार दिनांक १६-१०-९१**, दुर्गा अष्टमी तथा बलि दिवस है, यह **यज्ञ दिवस** भी है, इस दिन नवरात्रि में सम्पन्न की गई सभी साधनाओं को सार रूप में पुनः सम्पन्न किया जाता है, यह मूल रूप से **'मनोवांछित कामना सिद्धि दिवस'** है, इस दिन प्रातः विशेष मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न कर यज्ञ, आरती, ब्राह्मण भोजन सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रकार नवरात्रि के नौ दिन, नौ सिद्धि दिवस हैं, जिसमें विधि-विधान सहित पूजन सम्पन्न कर, साधक अपना जीवन नये ढंग से प्राप्त कर सकता है।

नवरात्रि साधना हेतु जो अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न किये जाते हैं, उस हेतु विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता रहती है, और ये १५ दुर्लभ वस्तुएं निम्न प्रकार से हैं—

१- मन्त्र सिद्ध गुरु यन्त्र, २- **ताम्र पत्र** अंकित दुर्गा यन्त्र, ३- शत्रु स्तम्भन गुटिका, ४- जागृत दुर्गा प्रामाणिक चित्र, ५-५१ लक्ष्मी कमल बीज, ६-उपांगललिता सिद्धि क्रिया चक्र, ७- सरस्वती यन्त्र, ८- सौन्दर्य सिद्धि श्रीप्रोक्त, ९- पांच इक्षु धनु, १०- तांत्रोक्त नारियल, ११- व्यापार सिद्धि मोती शंख, १२- महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती श्री शक्ति यन्त्र, १३- अष्ट कीर्ति साफल्य, १४- योग माला, १५- अष्ट गन्ध।

ये सभी सामग्री एक विशेष पैकेट रूप में बना दी गई हैं, जिससे जो साधक न आ सकें, वे अपने घर में विधि-विधान सहित पूजन, साधना सम्पन्न कर सकें।

इसके अतिरिक्त साधना में आवश्यक सामान्य सामग्री जैसे आसन, जलपात्र, ताम्र पात्र, थाली, कुंकुम, चावल,

केसर, पुष्प, फूलमाला, नारियल, मौली, अबीर गुलाल, अगरबत्ती, धूप, घी का दीपक, फल, प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था अवश्य ही कर लें, और सभी वस्तुओं को पूर्ण रूप से प्रयोग में लाते हुए, पूजा विधान सम्पन्न करें।

नवरात्रि साधना के प्रथम दिन प्रातः जल्दी उठ कर अपना पूजा स्थान पूर्ण रूप से साफ करें, जल से स्थान को धो दें और फिर शुद्ध आसन बिछा कर पूजा प्रारम्भ करें, सभी सामग्री अपने पास रखें, जिससे साधना प्रारम्भ होने के पश्चात् उठना न पड़े, अब अपने सामने एक बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर सर्वप्रथम गुरु ध्यान करें, गुरु आज्ञा व आशीर्वाद मानसिक रूप से प्राप्त करें, जिससे पूरी नवरात्रि निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके, अब बाजोट के मध्य में एक चावल की ढेरी पर बड़ा जल पात्र रखें, उस पर नारियल स्थापित करें तथा अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें "मैं (अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र) शारदीय नवरात्रि पूजन अर्चन कर्म सम्पन्न कर रहा हूं," अब इस कलश को एक दूसरे बाजोट पर स्थापित कर दें तथा गणपति पूजन करें।

अब अपने सामने सर्वप्रथम **दुर्गा यन्त्र** तथा **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, श्री शक्ति यन्त्र** स्थापित कर दें, साथ ही दुर्गा चित्र अपने सामने तस्वीर रूप में लगा दें तथा पूजन सामग्री से पूजन करें, पुष्प चढ़ाएं और अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें —

मन्त्र

।। ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्य दर्प निसूदिनी
पूजां गृहाण सुमुखि त्रिपुरे शंकरप्रिये ।।

प्रथम दिन इस प्रकार स्थापना पूजन कर थोड़ा विश्राम कर प्रथम दिन का विशेष प्रयोग सम्पन्न करें, प्रथम दिवस को शत्रुस्तम्भन गुटिका का पूजन करना है, द्वितीय दिवस को लक्ष्मी कमल बीज से, तृतीय दिवस को अष्टकीर्ति साफल्य से, चतुर्थ दिवस को इक्षुधनु से, पंचम दिवस को उपांगललिता सिद्धि क्रिया चक्र से, षष्टम दिवस को तांत्रोक्त नारियल से, सप्तम दिवस को सरस्वती यन्त्र से, अष्टम दिवस को व्यापार सिद्धि मोती शंख से, नवम दिवस को सौन्दर्य सिद्धि श्रीप्रोक्त से पूजन सम्पन्न करना है।

प्रत्येक दिवस का मन्त्र जप अनुष्ठान अलग-अलग है, और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **योग माला** से मन्त्र जप प्रति दिन सम्पन्न करना है।

नीचे जो मन्त्र दिये जा रहे हैं, वे विशेष मन्त्र हैं योग माला से एकाग्र चित्त हो कर भक्ति भाव से मन्त्र जप अनुष्ठान सम्पन्न करना है---

प्रथम दिवस मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै ।।

एवं

।। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।।

द्वितीय दिवस मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।।

तृतीय दिवस मन्त्र

।। ॐ श्रीं स्ह क्ल्हीं श्रीं सर्व कीर्ति
सर्व साम्राज्यां नमः ।।

चतुर्थ दिवस मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः भगवति माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा ।।

पंचम दिवस मन्त्र

।। क्लीं उपांगललिता देवी विद्महे कामेश्वरी धीमहि ।।

षष्टम दिवस मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं कात्यायन्यै नमः ।।

सप्तम दिवस मन्त्र

।। ॐ ह्लीं ऐं ह्लीं सरस्वत्यै नमः ।:

अष्टम दिवस मन्त्र

।। ऐं ह्रीं आद्यलक्ष्मीं स्वयंभुवै ह्लीं ज्येष्ठायै नमः ।।

नवम दिवस मन्त्र

।। ॐ ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्ट ग्रहान हुं फट् स्वाहा ।।

इस प्रकार इन नौ दिनों में प्रतिदिन विशेष मन्त्र की कम से कम ग्यारह माला मन्त्र जप सम्पन्न करनी है, गणपति पूजन, दुर्गा आरती सम्पन्न करना है, नित्य नैवेद्य, फल और पुष्प अलग लायें, जिस दिन जो प्रसाद चढ़ाएं, वह प्रसाद उसी दिन ग्रहण कर लें।

नवम दिवस को बलि आयोजन में किसी बड़े फल को तथा नारियल को देवी के अर्पण किया जाता है।

इस प्रकार पूर्ण पूजा विधान सम्पन्न होने पर अपनी श्रद्धा अनुसार ब्राह्मण भोजन, नौ कुंवारी कन्याओं को भोजन कराना चाहिए और उन्हें यथा योग्य दक्षिणा देनी चाहिए।

पूर्ण प्रयोग अनुष्ठान सम्पन्न हो जाने के पश्चात् यन्त्र तथा माला के अतिरिक्त सभी सामग्री जल समर्पण कर देनी चाहिए।

उपरोक्त पूजा विधान सम्पन्न करने से साधक मां भगवती की पूर्ण कृपा प्राप्त करता है, उसका जीवन, उसका ज्ञान, उसका प्रभाव, उसका सौन्दर्य, श्रेष्ठता में परिवर्तित हो जाता है, मां की कृपा जब प्रारम्भ होने लगती है, तो उसका कोई अन्त नहीं है, अपने चित्त को पूर्ण रूप से खोल कर मां के सम्मुख अपने आपको समर्पित कर देना है।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ।।

दीपावली पर्व

इस वर्ष दीपावली ५-११-१९९१ मंगलवार को है, इसके पूजन मुहूर्त निम्न प्रकार से हैं—

बही-खाता लाने का मुहूर्त

व्यापार हेतु बही-खाते लाने का मुहूर्त निम्न है -

क- दि० १०-१०-९१ को प्रातः १० बजे से ११.३० बजे तक
ख- दि० १३-१०-९१ को १२.०३ से १.१२ तक
ग- दि० २०-१०-९१ को सायं ४.१८ से ५.४८ तक
घ- दि० ३०-१०-९१ को प्रातः १०.१० से १२.२० तक

धनत्रयोदशी—श्री कुबेर पूजा मुहूर्त

क- दि० ३-११-९१ सायं ६ बजे से ७.१८ तक गोधूलि बेला

महालक्ष्मी पूजा मुहूर्त

दि० ५-११-९१ दीपावली के दिन प्रातः ११.०१ से १.४५ तक, लाभ अमृत बेला में कलम-दवात पूजा, मन्दिर पूजा मुहूर्त है।

लक्ष्मी पूजन (मुख्य दीपावली पूजन)

क- ५-११-९१ सायं ६.३१ से ८.२५ तक वृषभ स्थिर लग्न
ख- रात्रि १२.५७ से ३.१४ तक स्थिर सिंह लग्न है, यह लक्ष्मी पूजन का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त है।

दिनांक २४-१०-९१ से ६-११-९१ तक महा-लक्ष्मी कल्प है, इस पूरे कल्प में विभिन्न महालक्ष्मी साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं।

सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते

दीपावली महापर्व

लक्ष्मी प्राप्ति सिद्धि

दीपावली अर्थात् लक्ष्मी सिद्धि पर्व वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण दिवस है, जहां साधक प्रार्थना, कामना, साधना, करता है, उस लक्ष्मी की प्राप्ति का, जिसके बिना जीवन अधूरा है, लक्ष्मी की साधना आवश्यक है, इसके बिना जीवन में सब कुछ अधूरा ही रहता है, दीपावली महाकल्प में महालक्ष्मी का आह्वान, पूजन किस प्रकार सम्पन्न करना है, पत्रिका पाठकों हेतु कृपा सिन्धु पूज्य गुरुदेव से प्राप्त अमृत वचनों से साभार—

जीवन में नित्य नवीनता का संचार होना चाहिए, जहां यह महत्वपूर्ण तत्व समाप्त हो जाता है, वहां जीवन में नीरसता, निराशा छा जाती है, और यह नवीनता केवल लक्ष्मी कृपा से ही संभव हो सकती है, लक्ष्मी कृपा का स्वरूप विशाल है, और महालक्ष्मी कल्प का प्रत्येक दिवस इस कृपा को प्राप्त करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

आप अपने घर अपने मित्रों, सम्बन्धियों को आमन्त्रित करते हैं, स्वागत-सत्कार करते हैं, लेकिन यह भी विचार करें, कि आपको तो प्रधान रूप से लक्ष्मी को आमन्त्रित करना है, उसे अपने घर में स्थायी आवास देना है, जहां लक्ष्मी का निवास होगा, वहां और किसी प्रकार के आमन्त्रण की आवश्यकता ही नहीं है, सब अपने आप खिचे चले आयेंगे, लक्ष्मी तो वह केन्द्र बिन्दु है, जिसके

चारों ओर सारे सुख, सौभाग्य परिक्रमा करते हैं, जहां आपने इस केन्द्र बिन्दु की उपेक्षा कर दी, तो फिर सुखों को भूल जाइये।

पूज्य गुरुदेव ने एक बार प्रवचन में कहा, कि मनुष्य के जीवन में सात सुख प्रधान रूप से होते हैं, और जिसे ये सभी सातों सुख प्राप्त होते हैं, वही जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकता है, और ये सातों सुख लक्ष्मी के आधीन हैं, लक्ष्मी कृपा से ही इन सुखों की पूर्ण प्राप्ति संभव है।

पहला सुख— निरोगी काया
दूसरा सुख—निरन्तर धन प्राप्ति
तीसरा सुख—आज्ञाकारी संतान
चौथा सुख—राज्य सम्मान, पदोन्नति
पांचवा सुख—योग्य गृह लक्ष्मी
छठा सुख - शत्रु बाधा शान्ति
सातवां सुख—ब्रह्मत्व प्राप्ति, ईश्वर दर्शन

जीवन के ये सातों सुख लक्ष्मी की कृपा से ही संभव हैं, क्योंकि यदि लक्ष्मी है, तो आप अपने स्वास्थ्य को, अपने परिवार के स्वास्थ्य को श्रेष्ठ बना सकते हैं, लक्ष्मी है तो निरन्तर धन प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, कार्य-सफलता, प्राप्त कर जीवन में पूर्ण भौतिक सुख सुविधाएं प्राप्त की जा सकती हैं, संतान का पूर्ण आज्ञाकारी और योग्य होना, यदि आप पर लक्ष्मी कृपा है, तभी संभव है, संतान की शिक्षा-दीक्षा, श्रेष्ठ पालन, श्रेष्ठ सुविधाएं लक्ष्मी कृपा से ही संभव हैं, तभी संतान अपने पूर्ण गुणों का विकास कर परिवार में श्री वृद्धि कर सकती है, लक्ष्मी का सबसे महत्वपूर्ण स्वरूप राज्य सम्मान, राज्य प्रतिष्ठा, सरकारी बाधाओं से मुक्ति, उन्नति है, जहां लक्ष्मी का वास होता है, वहीं राजकीय उन्नति, अनुकूलता संभव है, पत्नी को गृह लक्ष्मी कहा गया है, और सुलक्षणा गृह लक्ष्मी के लिए धन-लक्ष्मी आवश्यक ही है, पत्नी के प्रति आपके कर्त्तव्यों की पूर्ति लक्ष्मी कृपा से ही संभव है।

आपका शत्रु कितना ही प्रबल हो, यदि आप पर लक्ष्मी कृपा है, तो आप निश्चित रूप से उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, लक्ष्मी कृपा से जीवन में वीरता, उत्साह, आत्मविश्वास, प्राप्त होता है, जो उपरोक्त छह सुखों को प्राप्त करने में सफल रहता है, वही सातवां सुख ब्रह्मत्व प्राप्ति, ईश्वर दर्शन प्राप्त कर सकता है।

यह सब लक्ष्मी का साम्राज्य है, और लक्ष्मी कृपा तथा सातों सुख उन्हें ही प्राप्त होते हैं, जो पूर्ण भक्ति भाव से लक्ष्मी का आह्वान, पूजन, सम्पन्न करते हैं, लक्ष्मी साधना करते हैं, और इसी के अनुरूप कार्य करते हैं, लक्ष्मी के अभाव में तो यही जीवन नरक के समान हो जाता है, जहां पीड़ाएं, चिन्ता, तिल-तिल कर मारती हैं।

इस वर्ष लक्ष्मी महोत्सव—दीपावली

इस वर्ष दीपावली का महापूजन दिनांक ५-११-९१ को है, इसकी प्रतीक्षा प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य रहती है, पूजा पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न हो, लक्ष्मी कृपा का पूर्ण फल प्राप्त हो, पूरे वर्ष घर में सुख-शान्ति, सभी सुखों में वृद्धि हो, इस हेतु कई साधकों ने, शिष्यों ने पूज्य गुरुदेव को पत्र लिखे, व्यक्तिगत निवेदन भी किया, कि हमें ऐसा विधान भेजा जाय, जिसे हम स्वयं अपने परिवार के साथ सम्पन्न कर सकें।

इस सम्पूर्ण महालक्ष्मी पूजन में जो आवश्यक सामग्री हो, वह पूज्य गुरुदेव की कृपा से कार्यालय से प्राप्त हो, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार इस वर्ष **विशेष महालक्ष्मी दीपावली पूजन पैकेट** तैयार किया जा रहा है, इस पैकेट में निम्न २१ लक्ष्मी साधना सामग्री प्रमुख हैं, प्रत्येक सामग्री पांच प्रकार के लक्ष्मी प्रयोगों से मंत्र सिद्ध हैं, क्योंकि मंत्र सिद्ध सामग्री ही पूजन में, साधना में पूर्ण सिद्धि दिला सकती है।

१- भगवती महालक्ष्मी का प्रामाणिक दिव्य मन्त्र सिद्ध चित्र, २- सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र, ३- कल्प वृक्ष मुद्रिका, ४- तीन हिरण्य गर्भ—जो सौभाग्य लक्ष्मी, समृद्धि लक्ष्मी, शान्ति लक्ष्मी मन्त्रों से चैतन्य हैं, ५-ऋद्धि-

सिद्धि गुटिका, ६-महात्रिपुर सुन्दरी यन्त्र, ७-लक्ष्मी चक्र, ८-कमला यन्त्र, ९-मोती शंख, १०-वरदायक गणेश विग्रह, ११- लक्ष्मी वरद, १२-गोमती चक्र, १३- लक्ष्मी कीलन यन्त्र, १४- त्रिगन्ध, १५- कार्य सिद्धि रुद्राक्ष, १६- २१ कमलबीज, १७- शतअष्टोत्तर लक्ष्मी मन्त्रों से आपूरित कमलगट्टा माला, १८- सहस्राक्षी लक्ष्मी चक्र, १९- तारा तन्त्र स्फटिक, २०- पद्मावती सिद्ध, सौभाग्य चक्र २१- गुरु कृपा श्रीफल।

इसके अतिरिक्त पूरी पूजा में आवश्यक अन्य सामग्री भी भेजने की व्यवस्था की जा रही है, इस वर्ष दीपावली पूजन कैसे करना है, दीपावली के दिन प्रातः से रात्रि पूजन तक और दूसरे दिन गोवर्धन पूजा तक साधना का क्रम क्या रहेगा, इसके लिए एक विशेष प्रपत्र तैयार किया गया है, जिसमें उपरोक्त प्रत्येक सामग्री के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण क्रम है।

यदि आप महालक्ष्मी के साधक हैं

यदि आप गुरु अमृत वचनों से प्रदत्त महालक्ष्मी का उपरोक्त सम्पूर्ण काया कल्प विधान सम्पन्न करना चाहते हैं, तो समय रहते ही कार्यालय को सूचना अवश्य भेज दें, जैसा कि ऊपर दिये गये विवरण से स्पष्ट है, कि इस पूजन सामग्री के, जिसमें प्रत्येक सामग्री पूर्ण मन्त्र आपूरित है, कम ही पैकेट तैयार हो सकेंगे, और गुरु कृपा से नवरात्रि से पहले शिष्यों और साधकों को भेजने की व्यवस्था की जा सकेगी।

हर वस्तु का मूल्य नहीं आंका जा सकता और इस पैकेट में तो प्रत्येक सामग्री दुर्लभ है, पूज्य गुरुदेव के आदेश से यह केवल पत्रिका सदस्यों को ही भेजी जायेगी, इस सम्बन्ध में एक पैकेट पर विशेष रियायती न्यौछावर **तीन सौ तीस रुपये** ही रखा गया है, और पत्रिका सदस्यों को इसी न्यौछावर पर यह महालक्ष्मी सिद्धि सम्पूर्ण पूजन पैकेट भेजा जा रहा है।

इस सम्बन्ध में अभी समय रहते, आप लिख देंगे, तो आपके लिए पैकेट तैयार कर दिया जायगा, और समय पर भेज दिया जायेगा, इस हेतु नीचे लिखा प्रपत्र भर कर भेज दें। ★

प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य एवं पत्रिका सदस्य हूं तथा पूर्ण विधि-विधान सहित दीपावली महालक्ष्मी पूजन साधना सम्पन्न करना चाहता हूं, अतः मुझे शीघ्र यह **"महालक्ष्मी दीपावली पूजन पैकेट"** भेज दिया जाये, मैं वी०पी० छुड़ाने का वायदा करता हूं।

१- मेरी सदस्यता संख्या..................

२- मेरा पूरा नाम..

३- मेरा पूरा पता..

....

हस्ताक्षर

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है. अतः प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है उनसे सम्बन्धित चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री, साधकों की सुविधा के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने हेतु कार्यालय ने व्यवस्था की है।

आप केवल पत्र द्वारा सूचित कर दें कि आपको कौन-कौन सी सामग्री चाहिए, हम डाक व्यय सहित, वह सामग्री वी०पी० द्वारा भेजने की व्यवस्था कर देंगे, जिससे सामग्री आपको उचित समय पर प्राप्त हो सकेगी।

साधना नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
विजयादशमी साधना-अपराजिता सिद्धि	११	अपराजिता यन्त्र	२१०)रु०
		सियारसिंगी	६०)रु०
		शंख माला	१२०)रु०
भय बाधा शान्ति भैरव प्रयोग	१३	भैरव महायन्त्र	१८०)रु०
पूर्वजन्म कृत दोष निवारण साधना	२१	गुरु यन्त्र	१५०)रु०
		गुरु रुद्राक्ष माला	३००)रु०
छोटे-छोटे विशेष प्रयोग—	२५	—	—
१-लक्ष्मी प्रयोग	,,	महालक्ष्मी चित्र	१०)रु०
		१०८ लक्ष्मी यन्त्र	१५०)रु०
		धनदा यन्त्र	१२०)रु०
२-सम्मोहन प्रयोग	२६	वशीकरण यन्त्र	७५)रु०
३-ग्रह शान्ति का साबर प्रयोग	,,	गणपति गुटिका	११०)रु०
		हनुमान गुटिका	१२०)रु०
		भैरव साबर गुटिका	६०)रु०
४-स्वर्णावती प्रयोग	२७	लक्ष्मी चित्र	१०)रु०
		सियारसिंगी	६०)रु०
		शंख या स्फटिक माला	१२०)रु०
५-भू-गर्भ निधि ज्ञान प्रयोग	२७	भू-गर्भ निधि सिद्धि यन्त्र	१६८)रु०
		भू-गर्भ सिद्धि लक्ष्मी बीज	६०)रु०
		काली हकीक माला	११०)रु०
६-रोग मुक्ति प्रयोग	२८	चिरमी के ३ दाने	१५)रु०
नवरात्रि साधना सिद्धि प्रयोग	३३	पैकेट (१५ सामग्री)	३००)रु०

पूज्य गुरुदेव, गुरुधाम— ३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली, टेलीफोन नं०-७१८२२४८

में

१५-६-६१ से २३-६-६१ तक रहेंगे, व उनके सान्निध्य में निम्न कार्यक्रम सम्पन्न होंगे, इच्छुक साधक गुरुधाम पहुंच कर साधनात्मक लाभ उठा सकते हैं—

१५ सितम्बर—महालक्ष्मी कल्पवास प्रयोग-पूजन, दिन के २ बजे से ४ बजे तक।

१७ सितम्बर—कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा दिन के ३ बजे।

१६ सितम्बर—कामदा मनोहारी प्रयोग

२१ सितम्बर—गुरुदेव जन्म पर्व—विशेष दीक्षा समारोह

- ☐ **साधनाओं से सम्बन्धित सामग्री जोधपुर से मंगा ली होगी, या वहीं से प्राप्त कर लें।**
- ☐ **'कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा' एवं २१ सितम्बर को दी जाने वाली दीक्षा के लिए पत्रिका के तीन नये सदस्य बनाने आवश्यक हैं।**

प्रत्येक साधक एवं शिष्य के लिए हर प्रकार की भौतिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान के साथ ही अन्तश्चेतना को शुद्ध, पवित्र व चैतन्यता प्रदान करने में सक्षम, जो पूज्य गुरुदेव की चेतना से उद्भूत, उनकी दिव्य ऊर्जा द्वारा अनुप्राणित, कुछ अद्वितीय व अनमोल रत्न—

- ★ **भौतिक सफलता : साधना एवं सिद्धियां— २४) रु०**
- ★ **लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग— १५) रु०**
- ★ **हिमालय का सिद्ध योगी— १५) रु०**
- ★ **गुरु सूत्र— ६) रु०**
- ★ **निखिलेश्वरानन्द रहस्य— १२) रु०**